पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२२, अंकः-१०, अप्रैल, सन्-२०१९, सं०-२०७६ वि०, दयानंदाब्द १९५, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२०; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

श्रीरामनवमी पर विशेष

श्री राम ने अपने उदात्त आचार-विचार से अपने समय के समाज को अनुप्राणित किया था !

रामराज्य स्वतः ही नहीं स्थापित हो गया था

- पं. शिव कुमार शास्त्री -

अपने प्राचीन इतिहास (रामायण बालकाण्ड) मे उस युग की इतनी सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की गई है कि आज के युग में उस पर पूरा विश्वास जमना भी कठिन प्रतीत होता है-

क्वचिन्न राजा तत्रासीत् न दण्डो न च दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्तिस्म परस्परम्।।

'उस समय न कोई राजा था, न कोई कानून था और न कोई व्यवस्थापक। सब प्रजा के लोग अपने कर्त्तव्य को जानकर एक-दूसरे की रक्षा करते थे।'

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या का वर्णन निम्न प्रकार से किया है-

अयोध्या नाम तत्रासीन्नगरी लोक-विश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।।

-संसार प्रसिद्ध अयोध्या नाम का सुन्दर नगर था। मनुष्यों में श्रेष्ठ महाराज मनु ने स्वयं इस नगर को बसाया था।

आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्तमहापथ।।

-यह महानगरी बारह योजन (६०मील) चौड़ी और छत्तीस योजन (१८० मील) लम्बी थी। उसमें आने-जाने के लिए बहुत विस्तृत सड़कें थीं।

राजमार्गेण महता सुविभक्तेन शोभिता।
मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यशः।।

-उस नगर में बहुत सुन्दर और विशाल राजपथ था। उस मार्ग पर नित्य पानी छिड़का जाता था। चहुँ ओर फूल खिले हुए थे।

जहाँ तक स्थापत्य और वास्तुकला का सम्बन्ध है, वह युग आज से किसी प्रकार कम नहीं प्रतीत होता। कुछ वैज्ञानिक उत्कर्ष तो उस समय के ऐसे हैं जिनकी तुलना आज का कोई राष्ट्र नहीं कर सकता। रामायण में ही वर्णित है-

अदंशमशकं राज्यन्नष्टव्यालसरीसृपम्।

-उस समय राज्य से मक्खी, मच्छर, बिच्छू और साँप सब समाप्त कर दिये गए थे।

यह स्थिति सम्भवतः विश्व के किसी भी देश की न हो। भारत की राजधानी दिल्ली में तो मक्खी-मच्छरों की भरमार है; तब विशेष चीज यह थी कि भौतिक सुख-साधनों के साथ-साथ वर्त्तमान भोगवाद का कोई दोष उस समय नहीं था। नैतिकता और मानवता से उच्चतम धरातल पर समाज का आचार-व्यवहार था। उस काल के सामाजिक व्यवहार की भी एक झाँकी देखिये-

शुचीनामेकबुद्धीनां सर्वेषां सम्प्रजानताम्।
नासीत् पुरे वा राष्ट्रे वा मृषावादी नरः क्वचित्।।

-सब पवित्र उच्चकोटि के ज्ञानी, राष्ट्रीय कार्यों में ऐकमत्य से चलनेवाले थे। सारे राष्ट्र में या अयोध्या नगरी में कोई झूठ बोलनेवाला नहीं था।

क्वचिन्न दुष्टस्तत्रासीत् परदाररतो नरः।
प्रशान्तं सर्वमेवासीद् राष्ट्रं पुरवरञ्च तत्।।

-उस राज्य में परस्त्री से प्रेम करने वाला कोई दुष्ट नहीं था। समस्त राष्ट्र और राजधानी में सब प्रकार से शान्ति थी।

कामी वा न कदर्यो वा नृशंसः पुरुषः क्वचित्।
द्रष्टुं शक्यमयोध्यायां नाविद्वान्न च नास्तिकः।।

-उस राजधानी में कोई कामी, कंजूस, क्रूर, मूर्ख और नास्तिक नहीं था।

त्रेतायुग के आते-आते वैदिक मर्यादाएँ शिथिल होने लगी थीं। महाराज दशरथ ने ही एक-पत्नीव्रत की मर्यादा का पालन नहीं कियां किन्तु उस समय राम जैसे महापुरुष ने अपने उच्च चरित्र और असाधारण सहिष्णुता से शिथिल वैदिक आदर्शों को पुनः स्थापित किया।

राम ने पुत्र, भाई, मित्र, पति और राजा आदि के सभी सम्बन्धों को आदर्श रूप में उपस्थित किया। विषम-से-विषम परिस्थिति में भी वह दृढ़ रहे। वाल्मीकि ने राम में कुछ ऐसे गुणों का वर्णन किया है, जो लोकोत्तर कहे जा सकते हैं। राम की बोल-चाल का वर्णन देखिए-

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्यमानोऽपि परुषन्नोत्तरं प्रतिपद्यते।।

-सदा शान्त रहते थे। बहुत मीठी भाषा बोलते थे। यदि कोई कटुभाषण करता था, तो उस कड़वी बात का उत्तर ही नहीं देते थे।

राम के व्यवहार का आदर्श भी देखिये-

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया।।

-यदि कोई राम के साथ एक भी उपकार का काम कर दे तो वे इतने से ही सन्तुष्ट हो जाते थे। उनको हानि पहुँचाने के लिए कोई शतशः विपरीत काम करता था, तो भी वे अपने आत्मिक बल के कारण उसकी परवाह नहीं करते थे।

इन महान् गुणों के परिणाम स्वरूप ही वह रामराज्य स्थापित हो सका, जिसे आज लाखों वर्ष बाद भी हम याद करते हैं। राम अपनी सूझ-बूझ से अपने पारिवारिक जनों और अपने भाइयों को न सम्भालते, तो फिर न जाने राम के घर की भी क्या दशा होती? उदाहरण के लिए एक दृश्य पर दृष्टि डालिए-

राम के वनवास की बात सुनकर लक्ष्मण राम के पास आए और यह परामर्श देने लगे कि आपको वन नहीं जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में आपको किसी को कुछ कहने की अथवा करने की आवश्यकता नहीं है। सब-कुछ आप मुझपर छोड़ दीजिये। राम ने लक्ष्मण को समझाया। लक्ष्मण ने पिता के प्रति कठोर शब्दों का प्रयोग किया तो झिड़का भी। सीता और लक्ष्मण के साथ राम वन में चले गए। वहाँ चित्रकूट में डेरा डाला। राम और सीता की सुरक्षा के लिए लक्ष्मण सदा तत्पर रहते।

इधर ननिहाल से भरत बुलाए गए। उन्हें सारी परिस्थिति जानकर अत्यन्त वेदना हुई। पिता की अन्त्येष्टि के बाद भरत ने मन्त्रिमण्डल और चुने हुए लोगों की सभा बुलाकर राम को वन से वापस बुलाने का विचार किया। सभा के निश्चय के अनुसार भरत तीनों मातओं और सभी मन्त्रियों के साथ राम को वापस लाने के लए वन में गए। भरत के साथ उस समय की रीति के अनुसार बहुत-सी सेना(९ लाख-वा.रा. अयो.८३) थी।

सेना के हाथियों, घोड़ों और रथों की धूल का घटाटोप आकाश में उठता हुआ लक्ष्मण ने चित्रकूट पर्वत की ऊँचाइयों से देखा और राम से कहा कि कोई सेना लेकर हमारी ओर आ रहा है। ज्यों-ज्यों धूल चित्रकूट की ओर बढ़ रही थी, लक्ष्मण की परेशानी उतनी बढ़ती जाती थी। उस समय राम की लापरवाही देखकर झुँझलाकर लक्ष्मण ने कहा-'आप तो ऐसे उदासीन हो गए हैं, जैसे संसार में जीना ही नहीं है! कोई सेना लेकर इधर आ रहा है, तो सोचना चाहिए कौन है? और क्यों आ रहा है?'

राम ने लक्ष्मण की व्याकुलता देखकर उसी से पूछा-'तुम्हीं अनुमान लगाओ- कौन हो सकता है?' अब लक्ष्मण का उत्तर वाल्मीकि के शब्दों में (अयोध्या काण्ड) पढ़िये-

सम्पन्नं राज्यमिच्छंस्तु व्यक्तं प्राप्याभिषेचनम्।
आवां हन्तुं समभ्येति कैकेय्या भरतः सुतः।।

-स्पष्ट है कि राज्य प्राप्ति करके भरत अपने राज्य को निष्कंटक बनाने के लिए सेना लेकर हम दोनों को मारने आ रहा है-

गृहीतधनुषावावां गिरिं वीर श्रयावहे।
अथवेहैव तिष्ठावः सन्नद्धावुद्यतायुधौ।।

-आइये हम दोनों धनुष-बाण लेकर पहाड़ पर चढ़ चलें अथवा शस्त्रास्त्र से लैस होकर यहीं मोर्चा सम्भाल लें।

पूर्वापकारिणं हत्वा नह्यधर्मेण युज्यते।
पूर्वापकारी भरतस्त्यागे धर्मश्च शाश्वतः।।

-पहले घात करनेवाले को मारने में कोई पाप नहीं लगता। भरत ऐसा ही है,

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

शोक कैसा है?

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतन्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः।।

(यजुर्वेद : 40/7)

हम जैसे हैं, जग वैसा है!

प्राणिमात्र
अपने जैसे हैं,
जिसने जाना;

प्राणिमात्र
तो अपने ही हैं
जिसने माना,

जिसने कहीं न दूजा देखा
उसको मोह, शोक कैसा है!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

चौकीदार नहीं; युगावतार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर मोदी को मैं अपनी दृष्टि से देखता हूँ तो पाता हूँ कि वे न तो चायवाले हैं, न चौकीदार हैं और न ही पहरेदार हैं वरन् वे युगावतार हैं। वे महाभारत (श्रीमद्‌भगवद्‌गीता) में श्रीकृष्ण की उद्‌घोषणा-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।।४.७।।

की प्रतिपूर्ति करते हैं। इसकी पुष्टि के लिए हमें सन् २०१४ अर्थात् मोदी के भारतीय राजनीत-क्षितिज में पूनम के चाँद की तरह उभरने के पूर्व के मंजर पर नजर डालनी होगी :

विगत लोकसभा चुनावों से पहले के भारत की जो दशा और दिशा थी, उसका विश्लेषण करने पर स्वामी रामदेव के शान्तिप्रिय योगसाधकों को अर्द्धरात्रि में घोड़ों की टापों से रौंदने की दिल दहला देने वाली घटना से तत्कालीन शासकों- यू.पी.ए. अर्थात् सोनिया, राहुल, कपिल इत्यादि की धर्म विरोधी क्रूर मानसिकता का परिचय मिलता है। जब शासन के ऊँचे पदों पर बैठे हुए लोग भ्रष्ट होते हैं तो अधीनस्थ व्यक्तियों को भ्रष्टाचार से रोका नहीं जा सकता है और अगर शासनतंत्र पूरी तरह से निष्क्रिय हो तो देश को अधःपतन से बचाया नहीं जा सकता। २०१४ से पूर्व चार बातें बहुत साफ साफ नजर आती हैं- १.बाह्य शत्रुओं की सक्रियता, २.अन्तरिक शत्रुओं की निर्भयता, ३.शासनतंत्र की निष्क्रियता, ४. भ्रष्टाचार की बहुलता

देश के हालात को बिगाड़ने के लिए उक्त चार में से एक ही तत्त्व काफी है, फिर जब चारों तत्त्व सजीव हो उठें हों तो राष्ट्ररक्षा का प्रश्न और भी गम्भीर हो उठता है। ऐसे ही समय को गीता में 'अभ्युत्थानमधर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत' कहा गया है, जिसे गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी भाषा में 'जब जब होंहिं धर्म कै हानी, बाढ़ैं असुर अधम अभिमानी' कहा है। श्रीकृष्ण चन्द्र की गीता में की गई उद्‌घोषणा के अनुसार ऐसे समय में 'संभवामि युगे युगे' को चरितार्थ करते हुए किसी महान् शक्ति का आविर्भाव अवश्यम्भावी होता है; जिसका उद्देश्य होता है-'परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम् धर्म संस्थापनार्थाय'।

२०१४ में भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी की उपर्युक्त उद्‌घोषणा के अनुरूप ही जिस महाशक्ति का आविर्भाव हुआ-उसका नाम है 'नरेन्द्र दामोदर मोदी'। नरेन्द्र दामोदर मोदी ने जब दोनों भुजाओं को उठाकर प्रतिज्ञा की कि मैं भारत वसुंधरा को भ्रष्टाचार, अन्याय तथा आतंकवाद से मुक्त कर दूँगा- तो उस समय मर्यादा पुरुषोत्तम राम का यह कथन मूर्तरूप ले उठा था-

निशिचर हीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन।
सकल मुनिन के आश्रमन, जाइ जाइ सुख दीन।।

मोदी जी ने अपनी प्रतिज्ञाओं को पूर्ण करके दिखा दिया। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि मोदी जी और उनके मंत्रिमण्डल के किसी भी सदस्य पर भ्रष्टाचार, गबन का एक भी आरोप नहीं है। वर्षों पुरानी 'लोकपाल' की माँग आज पूरी हो चुकी है। अन्ना हजारे का आमरण अनशन मोदी युग में अपने उद्देश्य को प्राप्त कर चुका है। जिन साधु संतों असीमानंद, प्रज्ञाठाकुर इत्यादि को बेवजह हिन्दू आतंकवादी सिद्ध करने के लिए और एक वर्ग विशेष की तुष्टीकरण एवं वोट प्राप्ति के लोभ के कारण पूर्व सत्ताधारियों ने घोर यातनाएँ दीं। मोदी जी के आगमन से इन समस्त यातनाओं का अंत हुआ-'विकसे संतसरोज सब हरसे लोचन भृंग'।

नक्सलवादियों ने अन्य देशों के सहयोग से जो हिंसक रूप धारण कर लिया था उस पर सर्जिकल स्ट्राइक द्वारा नियंत्रण पाया जा चुका है। यदि २०१४ के बाद भी यू.पी.ए.के नेतृत्ववाली कठपुतली सरकार रही होती तो आज कश्मीर योजनाबद्ध ढंग से पाक की झोली में चला गया होता किन्तु मोदी जी का रण कौशल है कि आज कश्मीर मजबूती के साथ भारत के साथ सूत्रबद्ध है- आतंकियों के हौसले पस्त हैं और उनकी अभेद्य रक्षापंक्तियों की कमर तोड़ दी गई है। आकस्मिक नोटबंदी ने जमाखोरों की साजिशों पर पूर्ण विराम लगा दिया है। भ्रष्टाचार से अर्जित पूँजी के छिन जाने से हताश क्षुब्ध नेतागण आज गठबंधन बनाने को बाध्य हो गये हैं।

मोदी जी से वही क्षुब्ध है, जो अपने या अपने परिवार के अनुचित तरीकों से भरणपोषण पर लगा था और अपनी पद-प्रतिष्ठा की रक्षा हेतु राष्ट्र की अस्मिता को भी दाँव पर लगाने को सन्नद्ध था किन्तु मोदी जी द्वारा पाकिस्तान को दी गई इस चुनौती के कारण वे सभी हतप्रभ हैं- 'चुन चुन कर मारेंगे, शत्रु के घर में घुस कर मारेंगे'। आजादी के बाद भारतीय लोकतंत्र गणराज्य के इतिहास में पहलीबार यह गर्जना सुनाई दी है।

मुंशी प्रेमचन्द कथा 'मुक्तिमार्ग' में कहते हैं कि चोरों में बड़ी जल्दी गठबंधन हो जाता है किन्तु सज्जनों में बड़ी मुश्किल से। त्रेतायुग में श्रीराम के विरुद्ध खर दूषण के पक्ष में असुर-शक्तियों का बहुत बड़ा गठबंधन हो गया और उसने श्रीराम का परिचय जानना चाहा। श्रीराम ने खर दूषण के नेतृत्व में बने असुरों के विशाल गठबंधन को जो उत्तर दिया था; वह ध्यान देने लायक है-

हम छत्री मृगया वन करहीं, तुम से खल-मृग खोजत फिरहीं।
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं, एक बार कालहुँ सन लरहीं।।

आज अर्द्धशत पार्टियों के वृहदाकार पाकिस्तानपरस्त महागठबंधन से बिना किसी प्रकार के भय या शंका के नरेन्द्र दामोदर मोदी का जवाब श्रीराम जैसा ही है।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९४

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

मुक्ति के साधन

तदनन्तर 'श्रवणचतुष्टय' एक 'श्रवण' जब कोई विद्वान् उपदेश करे तब शान्त, ध्यान देकर सुनना, विशेष ब्रह्मविद्या के सुनने में अत्यन्त ध्यान देना चाहिये कि यह सब विद्याओं में सूक्ष्म विद्या है। सुन कर दूसरा 'मनन' एकान्त देश में बैठ के सुने हुए का विचार करना। जिस बात में शंका हो पुनः पूछना और सुनने समय भी वक्ता और श्रोता उचित समझें तो पूछना और समाधान करना। तीसरा 'निदिध्यासन' जब सुनने और मनन करने से निस्सन्देह जो जाय तब समाधिस्थ हो कर उस बात को देखना समझना कि जैसा सुना था विचारा था वैसा ही है वा नहीं? ध्यान योग से देखना। चौथा 'साक्षात्कार' अर्थात् जैसा पदार्थ का स्वरूप गुण और स्वभाव हो वैसा यथातथ्य जान लेना ही 'श्रवण चतुष्टय' कहाता है।

सदा तमोगुण अर्थात् क्रोध, मलीनता, आलस्य, प्रमाद आदि; रजोगुण अर्थात् ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, विक्षेप आदि दोषों से अलग होके सत्त्व अर्थात् शांत प्रकृति, पवित्रता, विद्या, विचार आदि गुणों को धारण करे।

(मैत्री) सुखी जनों में मित्रता, (करुणा) दुःखी जनों पर दया, (मुदिता) पुण्यात्माओं से हर्षित होना, (उपेक्षा) दुष्टात्माओं में न प्रीति और न वैर करना।

नित्यप्रति न्यून से न्यून दो घण्टा

पर्यन्त मुमुक्षु ध्यान अवश्य करे जिससे भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात् हों।

देखो! अपने चेतनस्वरूप हैं इसी से ज्ञानस्वरूप और मन के साक्षी हैं क्योंकि जब मन शांत, चंचल, आनन्दित वा विषादयुक्त होता है उसको यथावत् देखते हैं वैसे ही इन्द्रियां प्राण आदि का ज्ञाता, पूर्वदृष्ट का स्मरणकर्त्ता और एक काल में अनेक पदार्थों के वेत्ता, धारणाकर्षण कर्त्ता और सबसे पृथक् हैं। जो पृथक् न होते तो स्वतन्त्र कर्त्ता इन के प्रेरक अधिष्ठाता कभी नहीं हो सकते।

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः। योगशास्त्रे पादे 2। सू. 3।।

इनमें से अविद्या का स्वरूप कह आये। पृथक् वर्त्तमान, बुद्धि को आत्मा से भिन्न न समझना अस्मिता, सुख में प्रीतिराग, दुःख में अप्रीति द्वेष, और सब प्राणिमात्र को यह इच्छा सदा रहती है कि 'मैं सदा शरीरस्थ रहूँ, मरूँ नहीं' मृत्यु दुःख से त्रास अभिनिवेश कहाता है। इन पांच क्लेशों को योगाभ्यास विज्ञान से छुड़ा के ब्रह्म को प्राप्त हो के मुक्ति के परमानन्द को भोगना चाहिये।

(प्रश्न) जैसी मुक्ति आप मानते हैं वैसी अन्य कोई नहीं मानता, देखो! जैनी लोग मोक्षशिला, शिवपुर में जाके चुपचाप बैठे रहना, ईसाई चौथा आसमान जिसमें विवाह लड़ाई बाजे गाजे वस्त्रादि धारण से आनन्द भोगना; वैसे ही मुसलमान सातवें आसमान; वाममार्गी श्रीपुर; शैव कैलाश; वैष्णव वैकुण्ठ और गोकुलिये गोसाईं गोलोक आदि में जाके उत्तम स्त्री, अन्न, पान, वस्त्र, स्थान आदि को प्राप्त होकर आनन्द में रहने को मुक्ति मानते हैं। *(-क्रमशः)*

वेदांजलि

मेरी विवशता

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।
वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये।।

(ऋग्वेद : 6/9/6)

शब्दार्थ-

(मे कर्णा विपतयतः) मेरे दोनों कान इधर उधर जा रहे हैं। **(चक्षुःवि)** मेरी आँख इधर-उधर विविध स्थानों पर पड़ रही है। **(हृदये आहितं यत् ज्योतिः) [तत्]** हृदय में स्थापित जो यह ज्ञानरूपी ज्योति है, वह भी अनेक स्थानों पर भटक रही है। **(मे मनः दूरे आधीः विचरति)** मेरा मन दूर-दूर चिन्ताओं में उलझा हुआ है [इस अवस्था में हे देव!] **(किं स्विद् वक्ष्यामि)** मैं क्या कहूँगा! **(किमू उ नु मनिष्ये)** और मैं क्या मनन करूंगा!

व्याख्या-

इस मंत्र में प्रभु-भक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को क्रम से गिनाकर यह बताया गया है कि जब तक विवेक द्वारा प्रत्येक इन्द्रिय और उसके नेता मन को विषय-विकारों से विरक्त कर पवित्र नहीं कर लिया जाता, तबतक भक्ति का नाटक तो किया जा सकता है, किन्तु भक्ति नहीं हो सकती।

यों तो प्रायः आस्तिकमात्र अपने संस्कार और बुद्धि के अनुसार मंत्रों, श्लोकों और स्तोत्रों का पाठ प्रभु-भजन के नाम पर करता है, किन्तु तात्त्विक दृष्टि से देखा जाय तो तबतक मन और इन्द्रियां विषयों से व्यावृत होकर समाहित नहीं होतीं, तबतक भजन कैसा?

सीधी-सादी भाषा में बड़े पते की बात कह दी है किसी सन्तकवि ने-

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुआ तो चहुंदिश फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं।।

मंत्र में कान और आंख-इन्द्रियों का उल्लेख ज्ञान-संग्रह में मुख्य होने के कारण कर दिया है, अन्यथा कुसंस्कार जन्य विषय-लिप्सा तो नाक, जीभ और त्वचा की भी कम भयावह और हानिकर नहीं है। सुगन्धित तेलों और इत्रों की गन्ध, चम्पा, चमेली, मोतिया और रजनी गन्धा की खुशबू कामोन्माद की ओर ही व्यक्ति को धकेलती है। मुगल बादशाह मुहम्मद रंगीला और लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह आदि का अधिकांश समय इत्रों के चयन और रागरंगों में ही व्यतीत होता था। जीभ के स्वाद के आकर्षण ने संसार के अधिकांश भाग का भक्ष्याभक्ष्य-विवेक परांगमुख कर दिया है। मनुष्य इतना तक भी नहीं सोच सकता कि तेरी जीभ का थोड़ी देर का चस्का किसी प्राणी की जीवनलीला को ही समाप्त कर देता है। हिंसा से बढ़कर कोई दूसरा पाप नहीं। चोरी, व्यभिचार आदि से पीड़ित का कुछ शेष तो रहता है, किन्तु हिंसा में तो प्राणी का बचता ही कुछ नहीं।

अब प्रश्न है कि कान, आंख और इनके सहयोगी असंस्कृत मन के चक्रव्यूह से बाहर निकलकर किस प्रकार प्रभु की आराधना की जावे?

इस मार्ग की सफलतापूर्वक यात्रा के लिए कुछ शास्त्रोक्त उपायों पर श्रद्धापूर्वक आचरण करना होगा। विचारपूर्वक देखा जावे तो प्रभु-भजन और आत्मदर्शन की आधारशिला, सांसारिक व्यवहार की भूमि पर ही रक्खी जाती है। अतएव इस मार्ग के उपदेष्टा महर्षि पतंजलि ने योग को जो चित्तवृत्ति-निरोध का नाम दिया है, उसे यम और नियम से प्रारम्भ किया है।

अध्यात्म के यात्री के लिए दूसरी बात कही 'करुणा' की। दुःखियों को देखकर आपके हृदय में करुणा और दया के भाव उत्पन्न होने चाहिएं। यदि संसार के सामान्य व्यवहार में भी सहानुभूति और समवेदना समाप्त हो जाय तो समाज का समूचा ढांचा ही चरमरा जाय। ठीक ही कहा है उर्दू के शायर ज़िगर ने-

जब तक कि ग़मे-इंसाँ से 'ज़िगर'
इन्सान का दिल मानूर नहीं।
जन्नत ही सही दुनिया लेकिन,
जन्नत से जहन्नुम दूर नहीं।।

दुःखी को देखकर साधारण व्यक्ति भी सहानुभूति से भर उठता है तो आत्म कल्याण के पथिक का हृदय तो बहुत कोमल और संवेदनशील होना चाहिए। इस सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द का वह उत्तर, जो उन्होंने एक हित-चिन्तक को यह परामर्श देने पर कि-"तुम दुनिया के सुधार के झगड़े में न पड़कर साधना से मुक्तिलाभ करो।" दिया था, कितना स्वाभाविक है कि-'समाज को इस दुःख की दलदल में छटपटाता छोड़कर मैं अपने अकेले की मुक्ति नहीं चाहता। इनके कष्ट-निवारण का यत्न करते-करते मेरी मुक्ति तो अपने-आप हो ही जाएगी।'

इसके आगे तीसरा कर्तव्य बताया- पुण्यात्माओं के पुनीत कर्तव्यों को देखकर और उनके यश को सुनकर मुदित होना चाहिए। दूसरों के यश को सुनकर जलने कुढ़ने की बीमारी से बड़ी कठिनाई से पीछा छूटता है। मात्सर्य को जीतने के लिए पहले मद को जीतना आवश्यक है। जबतक अन्दर अहंकार है, तबतक दूसरे के गुण पर मुग्ध होकर उसका प्रशंसक बनना असंभव है। अतः पुण्य कर्मा जनों को देखकर प्रसन्न होना चाहिए।

इसके आगे चौथा उपाय बताया कि मलिन वृत्ति के लोगों से उपेक्षाभाव से व्यवहार करे। समझाने से ऐसे व्यक्ति शत्रु बन जाते हैं। सम्पर्क बढ़ने से उनके ऊटपटांग कामों को देखकर मन अशान्त ही होगा।

इन चार प्रकार के व्यवहार का परिणाम होगा-'चित्तप्रसादनम्'- चित्त प्रसन्न होगा। फिर जब उपासना में बैठेंगे तो वे प्रतिकूलताएँ नाम को भी नहीं होंगी, जिनका वर्णन मंत्र में किया गया है कि कान इधर खींच रहे हैं, आंखें उधर घसीट रही हैं। तब विषयों से विषाक्त मन क्षुब्ध नहीं होगा, अपितु मन की स्थिति कबीर के शब्दों में इस प्रकार होगी कि-

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा-नीर।
पाछे-पाछे हरि फिरै, कहत कबीर-कबीर।।

("श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११८(अन्तिम)

परं सौभाग्यं नस्त्वमसि ललिता दीपकशिखा
भ्रमन्ती राष्ट्रेऽस्मिन् किरसि किरणाभां दिशि दिशि।
प्रबुद्धं राष्ट्रं नस्त्वयि समुदिते चोज्वलमुखं
प्रसन्नं सोत्साहं त्यजति गतिरोधं च चलति।।

कितना सौभाग्य है हमारा यह कि
तुम चलती-फिरती और मनोहर
दीपशिखा के समान
राष्ट्र में चारों दिशाओं में
घूमते रहते हो और
अपनी किरणों की
आभा फैलाते रहते हो ?
राष्ट्र जग गया है और
तुम्हारे प्रकट होने से उसका मुख
उजला भी हो गया है !!
अब प्रसन्न और उत्साहित
होकर राष्ट्र ने
अपना गतिरोध त्याग दिया
और वह चल पड़ा है ।।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, समाप्त)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा : (1) ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के आठ मंत्रों में पांचवां मंत्र 'येन द्यौ रुग्रा पृथिवी....' में कहा गया है कि वह परमात्मा अनेक लोकों को धारण करता है, तथा लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त करता है? जिन लोकों को परमेश्वर धारण करता है तथा मानयुक्त करता है-उनमें पृथिवी, द्यो, अन्तरिक्ष लोकों के बारे में हमें जानकारी है किन्तु शेष दो लोक स्वर्लोक और नाकलोक क्या हैं? कृपया स्पष्ट करें।

(2) शान्तिकरण के मंत्रों में यजुर्वेद अ.32, मं.5 'यस्मिन्नृचः साम यजू..... ' में ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद का नाम आया है किन्तु अथर्ववेद का नहीं? क्या अथर्ववेद की चारों वेदों में गणना नहीं की जाती है?

-पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

समाधान :

(1) द्यौः (सूर्य), पृथिवी तथा अन्तरिक्ष स्थान विशेष के व्यंजक हैं किन्तु 'स्वः' शब्द स्थान विशेष का व्यंजक न होकर मनुष्य की विशिष्ट चेतना, भावभूमि या मनःस्थिति का व्यंजक हैं। 'स्वः' कहते हैं 'सुख विशेष' को और 'नाक' कहते हैं 'आनन्द विशेष' को। स्वः और नाक के अन्तर को भी समझ लेना चाहिए। स्वः अर्थात् सुख विशेष मानव शरीर के रहते हुए ही प्राप्त करता है, किन्तु नाक अर्थात् आनन्द विशेष जिसे दुःख रहित मोक्ष कहकर समझाने का प्रयास किया गया है, शरीर से मुक्त होने पर ही आत्मा को प्राप्त होता है। स्वः की प्राप्ति के दो स्थान बताये जाते हैं- सत्संग और सुन्दर परिवार। सत्संग के संबन्ध में गोस्वामी तुलसी दास ने रामचरितमानस के प्रारंभ में ही- 'सत संगति मुद मंगल मूला' कह कर मनोहारी विवेचना प्रस्तुत की है। इसी तरह सुन्दर पारिवारिक जीवन का सुख सौंदर्य- 'अनुव्रतः पितुः पुत्रो'- अथर्ववेद के मंत्र में दर्शनीय है। नाक- दुःखरहित मोक्ष का परमानंद मानव शरीर से पृथक् होकर परमात्मा के सान्निध्य में प्राप्त होता है- इससे बढ़कर अन्य किसी आनन्द की कल्पना नहीं की जा सकती है।

(2) वेद में ज्ञान, भक्ति और कर्म सम्बन्धी तीन विद्याओं का वर्णन किया गया है। ऋग्वेद में पृथिवी लोक संबन्धी विद्या, यजुर्वेद में अन्तरिक्ष लोक संबन्धी विद्या और सामवेद में द्युलोक संबन्धी विद्या का वर्णन किया गया है। अथर्व वेद में किसी एक विद्या का वर्णन नहीं है वरन् तीनों लोकों की विद्याओं के ज्ञान का समावेश पाया जाता है। अतः जहाँ विद्या या ज्ञान-विज्ञान का संदर्भ है, वहाँ तीन वेदों ऋग्, यजु और साम का ही नामोल्लेख किया जाता है। किन्तु इसका यह मतलब नहीं है कि अर्थव वेद है ही नहीं। इसी दृष्टि से वेदों को वेदत्रयी, त्रयीविद्या, त्रिधा या त्रेता इत्यादि नाम भी दिये गये हैं। विद्या विवेचन के अलावा अन्य सभी जगहों पर चारों वेदों में अथर्व वेद का नाम अपरिहार्य रूप से लिया जाता है। (सहायक ग्रंथ-'वैदिक नित्य कर्म विधि'-पं.युधिष्ठिर मीमांसक)

(पृष्ठ 1 का शेष....)

श्रीराम ने.....

अतः इसका परित्याग धर्मानुकूल है।

राम लक्ष्मण के उत्तर को सुनकर छटपटा गए और कहने लगे-

धर्म्मर्थञ्च कामञ्च पृथिवीं चापि लक्ष्मण!
इच्छामि भवतामर्थे एतत् प्रति शृणोमि।।

-हे लक्ष्मण! धर्म, अर्थ, काम और इस सारे राज्य को भी मैं तुम भाइयों को सुख पहुँचाने की दृष्टि से चाहता हूँ, यह मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ।

यद्विना भरतं त्वाञ्च शत्रुघ्नं वापि मानव।
भवेन्मम सुखं किञ्चिद् भस्म तत् कुरुतांशिखी।।

-हे लक्ष्मण! भरत, तुझे और शत्रुघ्न को छोड़कर यदि मुझे कुछ सुख प्राप्त हो भी, तो ऐसे सुख को मैं आग लगाना पसन्द करूँगा।

स्नेहेनाक्रान्तहादयः शोकेनाकुलितेन्द्रियः।
द्रष्टुमभ्यागतो ह्येष भरतो नान्यथागतः।।

-प्रिय लक्ष्मण! प्रेमविभोर हृदय से मेरे तेरे वियोग में दुःखी भरत मुझे और तुझे मिलने आया है, किसी और विचार से नहीं।

विप्रियं कृतपूर्वन्ते भरतेन कदा नु किम्।
ईदृशं वा भयन्तेऽद्य भरतं यद्विशंकसे।।

-क्या पहले कभी भरत ने तुम्हें कोई कष्ट दिया है, जिसके कारण तुम डर रहे हो और उस पर शंका कर रहे हो?

यदि राज्यस्य हेतोस्त्वमिमां वाचं प्रभाषसे।
वक्ष्यामि भरतं दृष्ट्वा राज्यमस्मै प्रदीयताम्।।

-यदि राज्य के कारण तुम यह बात कह रहे हो तो भरत के मिलने पर मैं उसे कहूँगा कि यह राज्य लक्ष्मण को दे दो।

उच्यमानोहि भरतो मया लक्ष्मण तद्वचः।
राज्यमस्मै प्रयच्छेति वाढमित्येव मंस्यते।।

-हे लक्ष्मण! मेरे इस राज्य देने के प्रस्ताव पर भरत हाँ ही करेगा, ना नहीं।

राम के उद्गार कितने औदार्यपूर्ण और महान् हैं। राम ने इसी प्रकार के उदात्त विचार और आचार से अपने समय के समाज को अनुप्राणित किया था। यदि समय के प्रभाव से ही सब-कुछ होता तो उसका प्रभाव लक्ष्मण पर क्यों नहीं है, जो भरत को मारने के लिए उद्यत हो गया? फिर बालि और सुग्रीव, विभीषण और रावण भी तो त्रेता में ही थे। त्रेता का जादू उन्हें क्यों नहीं प्रभावित कर रहा था? वस्तुतः बात वही है कि राम ने अपने पवित्र और उच्च आचरण से सभी विचारशील व्यक्तियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया था।

इतिहास में अनेक उदाहरण ऐसे हैं कि राजा ने अपने अन्तिम समय में उत्तराधिकारी पुत्र को छोटा देखकर राज्य का अधिकार अपने भाई को देते हुए कहा कि इसके समर्थ और योग्य होने पर इसको राजा बना देना। यदि इसमें यह क्षमता न हो तो फिर शासनसूत्र अपने हाथ में ही रखना। इस संसार से विदा लेने वाले भाई के प्रस्ताव को भाई ने रोकर स्वीकार कर लिया, किन्तु राज्य पाने के बाद जब चस्का लगा तो असली उत्तराधिकारी को समाप्त करके भी शासन को अपने अधिकार में रखने की बात मन में आई। इस प्रकार के दो नाम मुंज और वनवीर के तो बहुत ही प्रसिद्ध हैं। मुंज को भोज के पिता ने और वनवीर को उदयसिंह के पिता महाराणा साँगा ने राजा बनाया था। फिर क्या कारण था कि १४ वर्ष तक अयोध्या पर शासन करके भी भरत के मन में कोई विकार नहीं आया?

भरत को नन्दिग्राम में जब राम के वन से वापस आने का समाचार दिया गया तो भरत पुलकित हो उठे और कहने लगे-

अद्य जन्म कृतार्थं मे संवृतश्च मनोरथः।
यत्त्वां पश्यामि राजानमयोध्यां पुनरागतम्।।

-आज मेरा जीवन सफल हो गया। मेरी सब मनौतियाँ पूरी हो गईं कि आज अयोध्या के अधिपति को, आपको आया हुआ देख रहा हूँ।

पादुके ते तु रामस्य गृहीत्वा भरतः स्वयम्।
चरणाभ्यां नरेन्द्रस्य योजयामास धर्मवित्।।

-भरत ने सिंहासन पर रखी राम की खड़ाऊँ स्वयं अपने हाथ से उठाकर राम के चरणों में पहनाकर अयोध्या के साम्राज्य की ओर संकेत करके कहा-

एतत्ते सकलं राजन्न्यासन्निवर्तितं मया।

-हे भाई! तुम्हारा यह सारा राज्य मैंने धरोहर के रूप में सुरक्षित रक्खा है, अब इसे आप सम्भालिये।

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि राम के समय का समाज राम, भरत तथा इसी प्रकार के उदात्तचरित विचारशील व्यक्तियों ने बनाया था। वह समय के प्रभाव से स्वतः नहीं बन गया था।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

श्रीरामनवमी-जन्मदिन पर विशेष

सीतपुर छात्र-जीवन का एक पृष्ट

वे तूफानी तीन दिन

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

सन् १६५६, राजा रघुबरदयाल इण्टर कॉलेज, सीतापुर। सामूहिक प्रार्थना के बाद सभी छात्र अपनी अपनी कक्षाओं में जा चुके थे; शिक्षकों ने अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया था, कॉलेज पूर्णरूपेण शान्त था। अचानक कॉलेज का घण्टा घनघना उठा, आकस्मिक छुट्टी के विभ्रम में छात्र कक्षाओं से बाहर आ गये और तभी अन्य कालेजों के छात्र नारे लगाते हुए कक्षाओं को बन्द कराने लगे। पता चला यह हड़ताल इसलिए कराई जा रही है कि कश्मीर में कहीं गीता और रामायण की प्रतियां अलगाववादी पाकपरस्त तत्वों द्वारा जलाई गई हैं, उसी के विरोध स्वरूप भारत के अन्य भागों में भी प्रदर्शन हो रहे हैं; सीतापुर में भी उसी की प्रतिक्रिया हो रही है। नारे लग रहे थे-छात्र एकता जिन्दाबाद, स्टूडेंट यूनिटी जिन्दाबाद, शिक्षक और प्रिंसिपल अवाक् थे- शान्त थे और छात्रों को जुलूस सड़क पर आ चुका था। बटगंज से होकर लोहार बाग, ग्रीकगंज, घंटाघर इत्यादि स्थानों से होता हुआ, यह जुलूस लालाबाग पार्क में एक सभा के रूप में तब्दील हो गया और भाषण होने लगे। अब यह स्पष्ट था कि इसके पीछे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (रा.स्व.से.संघ की छात्र शाखा) का पूरा हाथ था। मेरा नाम भी पुकारा गया क्योंकि सीतापुर के उस समय के सबसे बड़े कॉलेज राजा कालेज के छात्रसंघ को मैं अध्यक्ष था। कदकाठी, वेशभूषा में तो अत्यंत साधारण था किन्तु वाद विवाद प्रतियोगिताओं में विजेजा होने के कारण मेरा नाम विख्यात हो चुका था। मैंने भी गीता-रामायण जलाये जाने के विरोध में जोशीला भाषण दिया और सदा की तरह तालियां बटोरीं। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकारी गुप्तचर एजेंसियों द्वारा मेरा नाम आन्दोलन के नेताओं में दर्ज हो गया। सभा विसर्जित हुई और सब लोग अपने आवासों पर चले गये।

मैं आर्य समाज मंदिर सीतापुर (घासमंडी) में रहता था, रात्रि में हम लोग सबसे ऊपर छत पर सोया करते थे-मूलचंद रस्तोगी मेमोरियल हाल के सामने। प्रातः लगभग ४ बजे अचानक मंत्री जी के नाम से मशहूर श्री मथुरा प्रसाद आर्य ऊपर आये और मुझे जगाया और कहा- 'वेद, तुम अभी पीछे वाले दजवाजे से बाहर चले जाओ, क्योंकि आर्य समाज मंदिर के बाहर पुलिस बैठी हुई है, तुम्हारे खिलाफ गिरफ्तारी का वारंट कट चुका है।' उस दिन मेरे बहनोई स्व.श्री पी.एल.शुक्ल भी वहीं रुके थे। मंत्री जी ने शुक्ला जी से कहा- 'तुम वेद प्रकाश को लेकर अपने आवास आर्यनगर चुपके से चले जाओ, कोई जान न पाये।' मंत्री जी को भूरि भूरि धन्यवाद देते हुए मैं शुक्लाजी के साथ आर्य समाज मंदिर के पीछे वाले दरवाजे से बाहर आया और आर्य नगर में आकर रुक गया। दिन भर वहीं रहा, मेरे खाने पीने की व्यवस्था वहाँ पर थी। सायंकाल संघ कार्यकर्ताओं ने मुझे ट्रेन से लखनऊ जाने का निर्देश दिया क्योंकि सीतापुर में पुलिस ने कई छात्रों को गिरफ्तार कर लिया था। मुझे श्री महेश डालडा के साथ आर्य नगर से निकलकर सीतापुर स्टेशन से लखनऊ वाली ट्रेन पकड़नी थी। मेरे छात्र साथियों ने कहा-तुम्हें अपनी वेशभूषा बदलकर जाना होगा। क्योंकि कुर्ता पायजामा में पुलिस पहचान लेगी। मेरे एक छात्र मित्र श्री अशोक दीक्षित (श्री मधुसूदन दीक्षित वैद्य के पुत्र) ने अपनी बढ़िया टेरीकाट की पैंट, बुशशर्ट और अपनी चप्पल पहनने को दी और चश्मा लगाने को दिया। मैं वेशभूषा बदल कर श्री महेश डालडा के साथ रेलवे स्टेशन आया और ट्रेन में बैठकर सकुशल लखनऊ आ गया; जहाँ पूर्व निर्धारित व्यवस्थानुसार राजा बाजार में सीनियर छात्र श्री रामकुमार गुप्त, जो कि किराये के कमरे में रहते थे, के पास ठहरा। उनकी बनाई खिचड़ी का स्वाद आज भी नहीं भूला है। सीतापुर में पूरी हड़ताल रहीं सारी दूकानें, दफ्तर इन गिरफ्तारियों के विरोध में बंद थे, जन प्रतिनिधियों ने शासन को चेतावनी दी कि हड़ताल तभी खत्म होगी जब सभी छात्र छोड़े जायेंगे और उनपर से मुकदमें वापस ले लिये जायेंगे। अखबारों (स्वतंत्र भारत, पायनियर, नवजीवन इत्यादि) में इन समाचारों को प्रमुखता से स्थान मिला। अखबारों ने छापा था कि पुलिस दो छात्रों- वेद प्रकाश आर्य और महेश डालडा- को विशेष रूप से खोज रही है। दूसरे दिन भी सीतापुर में हड़ताल रही। तीन दिन तक आम हड़ताल अर्थात् किसी छात्र आन्दोलन को इतना व्यापक समर्थन सीतापुर के इतिहास में पहली बार मिला था। शासन को अन्ततः झुकना पड़ा। सभी मुकदमें वापस लिये गये, गिरफ्तार हो चुके छात्रों को बाइज्जत रिहा किया गया, हालात सामान्य हुए और तीन दिन बाद कालेजों में पढ़ाई भी बहाल हुई।

सीतापुर की जनता और छात्रों के दिलों में मेरे लिए सम्मान और प्यार था किन्तु शिक्षा प्रशासन ने इस घटना को गंभीरता से लिया तथा तत्कालीन जिला विद्यालय निरीक्षक ने राजा कालेज के तत्कालीन प्रिंसिपल श्री भगवती प्रसाद श्रीवास्तव जो 'बाबा' के नाम से जाने जाते थे, पर दबाव डाला कि वे वेद प्रकाश नामक छात्र को निष्कासित कर दें। किन्तु ऐसा सम्भव नहीं हो पाया। एक तो श्री कृष्णकिशोर मिश्र जैसे विद्वान अध्यापक मुझे निर्दोष मानते थे उनका मानना था कि वेद प्रकाश कभी गलत हो ही नहीं सकता। दूसरे श्री मथुरा प्रसाद आर्य (मंत्रीजी) मेरे स्थानीय अभिभावक थे। मंत्रीजी की सभी बेतहाशा इज्जत करते थे। मंत्री जी के 'वार्ड' को कोई छू भी नहीं सकता था।

इन तूफानी तीन दिनों ने सीतापुर की राजनीतिक जीवनधारा को कितना प्रभावित किया इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि १६५७ के चुनावों में सीतापुर की विधानसभा सीट सेश्री तम्रेश्वर प्रसाद के रूप में भारतीय जनसंघ को पहली सफलता प्राप्त हुई।

इस घटनाक्रम के कई साक्षी आज भी मौजूद हैं। श्री 'वीरजी' तथा गुरुप्रसाद मिश्र गांधी के अलावा श्री रुद्रप्रताप बहादुर सिंह, डॉ. उमाशंकर शुक्ल, श्री अनूप श्रीवास्तव, डॉ.राजेन्द्र कुमार साहू तथा श्री कृष्ण कुमार गुप्त एडवोकेट इत्यादि।

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' का मार्च २०१९ का अंक देखा। इसके मुखपृष्ठ पर महान चिन्तक जन-नायक स्व.प्रकाशवीर शास्त्री की पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत' से सम्पादित अंश प्रकाशित है जिसमें बड़े तर्क-संगत आधार पर यह सिद्ध किया गया है कि भारत और पाकिस्तान की सीमाएँ प्राकृतिक न होकर मात्र कलम की नोंक से बनी हैं और उसी से हटाई जा सकती हैं। 'विनय पीयूष' के अन्तर्गत श्री अमृत खरे ने यजुर्वेदीय मंत्र का सार-गर्भ हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया है। 'वेदांजलि' के अन्तर्गत पं.शिवकुमार शास्त्री का संक्षिप्त लेख अति प्रेरणास्पद है। आचार्य दीपांकर कृत 'दयानन्द चरितम्' का अंश उनकी महत्ता का उद्गात है। पं.बालगोविन्द पालीवाल विषयक लेख उनके त्याग और समर्पण का प्रेरक प्रमाण है। 'शुभाकांक्षा' शीर्षक में विभिन्न विचारकों के चिन्तन सूत्रों का पता चलता है। 'अक्षर लोक' स्तंभ में दो साहित्यिक कृतियों की संक्षिप्त विशेषता उल्लिखित है। डॉ.सत्यव्रत विद्यालंकार कृत 'आर्य संस्कृति के मूल तत्व' शीर्षक लेख अत्यंत महत्त्वपूर्ण चिन्तन-सूत्रों का दिग्दर्शक है। शास्त्रार्थ महारथी पं.रामचन्द्र देहलवी के 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' के अन्तर्गत तात्विक बातें सामने रखी हैं, जो कृत्रिमता से रहित हैं। 'काव्यायन' शीर्षक में 'अभिनन्दन का अभिनन्दन' कविता डॉ. वेद प्रकाश आर्य के काव्य-कौशल का श्रेष्ठ नमूना प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त सर्वश्री महेशचन्द्र द्विवेदी, गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', डॉ.कैलाश निगम, उमेश राही, दयानंद जड़िया 'अबोध' की कविताएँ मनोरम हैं। राष्ट्रकवि दिनकर कृत 'मेरे नगपति मेरे विशाल' की हुंकार तो अप्रतिम ही है।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज के विभिन्न प्रदेशों, जनपदों से संबन्धित आयोजनो, साहित्यिक कार्यक्रमो आदि की सूचनाएँ दी गयी हैं और 'चुनावी जंग तथा होलिका के रंग' में विभिन्न व्यक्तित्वों को रेखांकित करते हुए व्यंग्य बौछार भी है, जिससे इस पत्र का वैविध्य विस्तार मनोनंजक बन पड़ा है।

'वार्ता' का सम्पादकीय पूर्व की भाँति ही अपनी मौलिक सूझ का उत्तम निदर्शन प्रस्तुत करता है। 'दयानन्द दिग्विजय' के दो अध्यायों की चर्चा बड़े कौशल के साथ सामयिक परिवेश से जोड़कर जिस प्रभावशालिता के साथ प्रस्तुत की गयी है, वह सर्वथा स्तुत्य है। ऐसे विचारपरक श्रेष्ठ पत्र-सम्पादन हेतु अनेकशः बधाई।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
78, त्रिवेणी नगर-1, लखनऊ-20

***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में मैं २५ से २८ नवम्बर २०१८ तक रहा तथा सम्मेलन की सभी गतिविधियां देखीं व सुनीं। वो विशालकाय पाण्डाल जिसमें बीच बीच में टीवी स्क्रीन लगे हुए थे जिससे स्टेज के सभी कार्यक्रम टीवी पर दूर से देख जा सकते थे तथा सुरक्षा की दृष्टि से भी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी। पहले दिन महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी द्वारा उद्घाटन किया गया। उन्होंने आर्य समाज के कार्यों पर प्रकाश डाला तथा प्रशंसा की। कार्यक्रम में स्वामी रामदेव व उनके गुरुकुल के बच्चों का भी विशेष योगदान रहा तथा केन्द्रीय मंत्री, सांसद, विभिन्न प्रदेशों के राज्यपाल, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर आदि का भी काफी योगदान रहा। 'आर्य लोक वार्ता' ने 'आर्य समाज ने देश में क्रान्तिकारियों की मजबूत फौज खड़ी की' शीर्षक के अन्तर्गत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा दिया गया भाषण पूरा का पूरा छापा है तथा केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह का भी भाषण 'आर्य लोक वार्ता' में पढ़ कर प्रसन्नता हुई। आर्य लोक वार्ता केवल एक पत्रिका ही नहीं अपितु आर्य समाज के स्वाध्यायशील आर्य जनों के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। इस प्रशंसनीय कार्य के लिए मैं आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी एवं उनकी पूरी टीम को बहुत बहुत बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि आपकी यह वैदिक पत्रिका समाज व राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करती रहेगी।

-डोरीलाल आर्य
आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ-16

***

विगत २३.०२.१९ को हंसादेवाचार्य के मार्ग दुर्घटना में आकस्मिक निधन का दुखद समाचार मिला तत्पश्चात् उनकी अन्त्येष्टि अग्निदाह संस्कार द्वारा की गई जो कि एक राहत भरी सूचना है क्योंकि इस क्रिया से नदी, धरती एवं वायु प्रदूषित होने से वंचित हुई है। स्वामी हंसादेवाचार्य रामानुजाचार्य जो कि विशिष्ठाद्वैतवादी पंथ के थे। उन्हीं के मत के होकर भी वे कभी भी कट्टरपंथी विचार के नहीं रहे। वर्ष २०१३ में प्रयागराज के कुम्भ में मुझे उनका प्रवचन सुनने का अवसर मिला और जो तथ्य उन्होंने तत्कालीन व्यक्त किये थे वह इस प्रकार हैं-'ईश्वर भक्त वह है जो कि विकार, वासना, दुर्गुण रहित होकर ईश्वर की साधना करे जिससे उसमें निर्भयता, विवेक, वैराग्य आदि गुणों का प्राकट्य हो। ईश्वर भक्त की प्रथम पहिचान उसकी निर्भयता से प्रकट होती है जिसमें वह निर्भय होकर न्याय व अन्याय का निर्णय कर सके।' उपरोक्त पर मेरा मंतव्य यह है कि अल्पज्ञ आत्मा दीर्घकाल तक अविद्या के अन्धेरे में नहीं रह सकती है। 'असतो मा ज्योर्तिगमय' उसकी नैसर्गिक गीत शाश्वत रहती है केवल मत, पंथ का अहं बाधक है। अहं के तिरोहित होते ही आत्मा सत्य स्वरूप को पाना चाहती है। अतः सत्य के ग्रहण करने व असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।

ऋषिराज तेरा यश चहुँ ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है।।

-प्रेमचन्द्र शर्मा
15, बहादुरपुर, लखनऊ

***

और कहीं पहुँचता हो या न पहुँचता हो, किन्तु मेरे पास नियमित रूपेण 'आर्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक अवश्य ही पहुँच जाता है। मार्च अंक में 'होली की भोली छींटें' बहुत आकर्षक और रोचक रहीं। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति को लेकर आपके संदर्भपूर्ण दोहे बहुत सुन्दर रहे-हालाँकि उनका स्थान छपने पर सम्भवतः प्रेस की असावधानी से बदल गया है- फिर भी उनको समझने में कोई गलती नहीं हुई क्योंकि दोनों दोहे अपने आप में पूर्ण हैं- उनमें राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के नाम भी आ गये हैं। ऐसी दशा में स्थान का विनिमय होने पर भी उनकी गुणवत्ता बरकरार है। कभी भी प्रेस की असावधानी से इस प्रकार की भूल-चूक हो जाती हैं।

'आर्य लोक वार्ता' की दो बातें विशेष अहमियत रखती हैं- एक तो आपकी सम्पादकीय और दूसरे अमृत जी का काव्यानुवाद 'विनय पीयूष'। ये दोनों स्तम्भ लाजबाव हैं और बेजोड़ हैं। इनको पढ़कर पाठकों का दिल और दिमाग तरोताजा हो जाता है। इस बार भी ऐसा ही हुआ है। सन् २०१९ को प्रारंभ हुए कई महीने हो गये किन्तु अभी तक वीरजी या नेतराम जी अथवा शचीन्द्र मिश्र सहयोग राशि नहीं ले गये। मैं प्रतीक्षा करता रहता हूँ क्योंकि ऐसे पत्र को निरंतर आर्थिक सहयोग प्रदान कर उसकी जड़ों को सींचते रहने की आवश्यकता रहती है। यदि ऐसा न किया जाय तो उसे कृतघ्नता ही कहा जायगा। मैं कृतघ्नता वाली श्रेणी में नहीं रहना चाहता हूँ।

-गुरुप्रसाद मिश्र 'गाँधी'
विजयलक्ष्मी नगर, सीतापुर, उ.प्र.

***

आर्य लोक वार्ता का मैं नियमित पाठक हूँ। सच बात तो यह है कि जो आनन्द मुझे आर्य लोक वार्ता के स्वाध्याय में मिलता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। आजकल पत्र-पत्रिकाओं में वही पुरानी घिसी पिटी बातें पढ़ने को मिलती हैं। कहीं भी कोई नवीन कल्पना या रचना पढ़ने को नहीं मिलती किन्तु आर्य लोक वार्ता का प्रत्येक पृष्ठ नई नई बातों और तथ्यों को सामने लाता है। विगत मार्च अंक में सर्वाधिक रोचक सामग्री मुझे मिली वह है आपका सम्पादकीय-'दयानंद दिग्विजय के दो अध्याय'। सम्पादकीय आपके मौलिक चिन्तन, सूझबूझ और सामयिक हलचलों पर पैनी नजर का परिचायक है।

-धर्मेन्द्र आर्य
सत्यनगर, रायबरेली, उ.प्र.

***

आर्य लोक वार्ता मार्च अंक के अन्तिम पृष्ठ पर 'होली की भोली छींटें' पढ़कर दशकों पूर्व की होली की परम्परा की स्मृति हो आयी जिसमें पत्र-पत्रिकाओं में होली के सुअवसर पर शिष्ट शालीन और व्यंग्यपूर्ण शीर्षक प्रकाशित होते थे। हर्षदायक और आश्वस्तिकारक है कि आर्य लोक वार्ता ने इस रचनाधर्म का निर्वाह किया है। एतदर्थ आप का कोटिशः आभार। अग्रलेख में भारत विभाजन पर मनीषी प्रकाशवीर शास्त्री के विचार शब्दशः सत्य हैं। भारत को स्वतंत्रता की प्राप्ति के साथ ही पाकिस्तान का जन्म भारत के लिए अनन्तकालीन त्रासदी बन गयी और खण्डित भारत के रूप में यह टीस भारतवासियों को सदैव झेलनी ही पड़ेगी। इसका समाधान पाकिस्तान के समूल विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं है उसे भारत में पुनः मिलाना ही राष्ट्रवाद का लक्ष्य होना चाहिए। पंच तत्वों से निर्मित मानव देह को मरणोपरान्त भस्मीभूत करना ही श्रेष्ठ माना गया है, इससे पांचो तत्व पूर्वरूप में समाहित हो जाते हैं, तद्विषयक आपका सम्पादकीय सुचिन्तक बोधपरक है। 'आर्य संस्कृति के मूल तत्व' धारावाहिक का श्रीगणेश प्रशंसनीय है अन्य विषयों की भांति यह रचना भी संग्रहणीय रहेगी। रामधारी सिंह दिनकर की मेरे नगपति मेरे विशाल देश भक्ति पूर्ण रचना के साथ डॉ. कैलाश निगम, महेशचन्द्र द्विवेदी, दयानंद जड़िया अबोध, डॉ.शितिकण्ठ का राष्ट्र अस्मिता को समर्पित काव्यसृजन अत्यंत प्रभावी लगा। रचनाकारों को साधुवाद। 'विनय पीयूष' के अन्तर्गत वेदमंत्र के काव्यानुवाद का रुचिर रसास्वादन हृदय को परम संतुष्टि प्रदान करता है। सुकवि अमृत खरे को स्वस्तिवाचन।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

याचनालय से

बहिश्त और स्वर्ग : डॉ. विवेक आर्य

इस्लामिक बहिश्त और वैदिक स्वर्ग, क्या दोनों एक हैं?

इस्लाम में जन्नत को प्राप्त करना जीवन का उद्देश्य बताया गया है। जबकि वैदिक मान्यता में मोक्ष जीवन का उद्देश्य है। अनेक इस्लामिक विद्वानों के अनुसार इस्लामिक जन्नत की हसीन हूरें, अंगूर की रसीली शराब, मीठा पानी, चश्मे आदि किसी भीषण गर्मी से त्रस्त रेगिस्तानी गड़रिये की अनोखी कल्पना मात्र प्रतीत होते हैं। वैदिक स्वर्ग सृष्टि में किसी विशेष स्थान का नाम नहीं है। अपितु, इसी धरती पर सुख पूर्वक रहना, सकल सृष्टि के प्राणी मात्र को समान समझना, स्वर्गमय जीवन का अंग है। इस्लामिक जन्नत के चक्कर में विश्व में पिछले १४०० वर्षों से इतना खून-खराबा होता आया है। जन्नत के चक्कर में इस धरती को नरक अर्थात दोजख ही बनाकर रख दिया गया है। वर्तमान में विश्व के अधिकांश इस्लामिक देश हिंसा और फिरकापरस्ती के झगड़े के चलते मनुष्य के रहने लायक नहीं रहे हैं। इसलिए इस्लाम की मिथक जन्नत के चक्कर में धरती को नर्क न बनायें। इसे स्वर्ग बनाने में योगदान दें। वेदों का यह सन्देश न केवल व्यावहारिक है, अपितु सत्य भी है।

(मासिक **'दयान्द सन्देश'**, दिल्ली)

स्वर्गवासी बनो : सन्दीप आर्य

आचार्य चाणक्य ने चाणक्य नीति में लिखा हे, जिस घर में चार काम होते हैं, वही घर स्वर्ग है-

पहला, जिस घर में ईमानदारी और परिश्रम से धन कमाया जाता हो और उस धन में से दान दिया जाता हो।

दूसरा, जिस घर के लोग आपस में मीठी वाणी बोलते हों।

तीसरा, जिस घर में माता-पिता आदि बड़ों का, गुरू का, अतिथि का सम्मान होता हो, पति-पत्नी एक-दूसरे का सम्मान करते हों।

चौथा, जिस घर में ज्ञानी लोगों का, विद्वान का मान-सम्मान होता हो व घर के सदस्य ज्ञान प्राप्ति में रुचि रखते हों।

ये चार विशेषताएँ जिस स्थान, जिस घर में हों, वही घर स्वर्ग है।

अतः हमें प्रयत्नशील रहना चाहिए कि हम ऐसी बार करें, ऐसे कार्य करें, जिससे आपसी प्रेम बढ़े, सहयोग बढ़े, जिसके फलस्वरूप घर में खुशियां आएं, परिवार भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी करे। हमारा घर स्वर्ग बने और हम सभी जीते जी स्वर्गवासी बनें।

(मासिक **'नूतन निष्काम पत्रिका'**, मुम्बई)

शैतान या पाचनवटी : प्रो. राजेन्द जिज्ञासु

अमृतसर में मौलवी गुलाम अली (इस्लामी साहित्य के जाने-माने आलिम) से पण्डित लेखराम जी का बहुत प्रेम था। पण्डित जी एक बार उन्हें मिलने गये तो वह अपने शिष्यों को पढ़ाते हुए कह रहे थे- कि यशिमाह नबी ने सायंकाल होने पर सूर्य को कहा, "खड़ा रह। मेरे कार्य में हानि होती है। वह आज्ञा पा कर वहीं खड़ा हो गया।"

पण्डित जी ने कहा कि आप तो बहुत बड़े विद्वान हैं, सब प्रामाणिक इस्लामी साहित्य के जानकार हैं, फिर इन बातों की शिक्षा कैसे देते हैं?...मान्य मौलवी जी ने कहा कि यदि हम ऐसा न मानें, तो लोग हमें काफिर कहेंगे।....

पण्डित जी ने लिखा है कि सत्यनिष्ठ बुद्धिमान इस शैतान विषयक विचार धारा से बहुत कष्ट पा रहे व भटक रहे हैं। जब भी पाप होता है, शैतान ने दुष्कर्म करवा दिया, कह कर दोष उस पर थोप देते हैं।...वास्तव में शैतान को पाचनवटी मानकर मोमिनों ने पाप से बचने के प्रयास छोड़ दिये हैं।

(पाक्षिक **'परोपकारी'**, अजमेर)

अद्भुत राज्य : आचार्य कर्मवीर

कुकुट मुनि शास्त्रकार हुए हैं। वे प्रसिद्ध ब्रह्मवेत्ता थे। जो ब्रह्म को जानता है, वह विज्ञान को भी जानता है। रावण के पास वे पहुंचे, तब रावण ने उनसे कहा- आप मेरे राज्य को जांच लें। मेरी भव्य और अद्भुत विज्ञान शालाओं को भी जांचें। रावण ने दिखलाया- यह मेरा सोने का महल है। इसे कुबेर ने बनवाया। यह मेरी यज्ञशाला है। इसमें सोने को गुम्बद शिव ने बनवाया। मेरी आयुर्वेदशाला में सुधन्वा वैद्य हैं। उनके पास सुषेण और आश्विन वैद्य हैं। महाराज आर्यु मानव हृदय को छः मास तक बाहर रखकर पुनः शरीर में स्थापित कर सकते हैं। गर्दन कट जाय, तो भी, औषधियों का लेप लगाकर पुनः जीवित कर सकते हैं। रावण की चन्द्रशाला में ऐसे विज्ञानी थे, जो मंगल, बुध, सूर्य और शुक्र आदि की यात्रा कर चुके थे। कुम्भकरण की प्रयोगशाला भी दिखायी, जो छः माह यहां और छः मास हिमालय में रहकर अनुसंधान करते थे।

कुकुट मुनि ने रावण से कहा, "तुम्हारा राज्य अद्भुत है, किन्तु इसमें कहीं भी चरित्रशाला नहीं है। जिस राज्य में चरित्रशाला न हो, उसका पतन शीघ्र हो जाता है।

(मासिक **'स्वस्ति पंथा'**, ज्वालापुर, हरिद्वार)

धारावाहिक-2 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

सभ्यता और संस्कृति में अन्तर

'सभ्यता' तथा 'संस्कृति' में आधारभूत भेद है। सभ्यता शरीर है, संस्कृति आत्मा है; सभ्यता बाहर की चीज है, संस्कृति भीतर की चीज है; सभ्यता भौतिक विकास का नाम है, संस्कृति आध्यात्मिक विकास का नाम है। रेल, तार, रेडियो, मोटर, हवाई जहाज आदि-ये सब सभ्यता के विकास के निदर्शक हैं; सचाई-झूठ, ईमानदारी-बेईमानी, सन्तोष-असन्तोष, संयम-संयमहीनता आदि-ये सब संस्कृति के ऊंचे या नीचे विकास के निदर्शक हैं।

यह जरूरी नहीं कि संस्कृति के विकास में हम इस परिणाम पर ही पहुंचें कि हमें जीवन में सचाई से ही काम लेना चाहिए, झूठ से नहीं; ईमानदारी से ही रहना चाहिए, बेईमानी से नहीं; संतोष को ही लक्ष्य बनाना चाहिए, असन्तोष का नहीं; संयम से रहना चाहिए, असंयम से नहीं। हो सकता है, कोई देश ऐसी संस्कृति को ही अपनाये जिसमें झूठ, बेईमानी, असन्तोष, संयमहीनता आदि ही आधारभूत तत्त्व हों, परन्तु ऐसों को 'सु'-संस्कृत नहीं कहा जाता।

संस्कृति के क्षेत्र में जो लोग अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा इसी प्रकार के आध्यात्मिक तत्त्वों को आधार बनाकर चलेंगे वे एक प्रकार की संस्कृति को जन्म देंगे, जो हिंसा, असत्य, स्तेय, अब्रह्मचर्य और परिग्रह आदि के दूसरी प्रकार के तत्त्वों को आधार बनाकर चलेंगे वे दूसरे प्रकार की संस्कृति को जन्म देंगे। इन दोनों का क्षेत्र संस्कृति होगी-एक ऊंची संस्कृति, दूसरी नीची संस्कृति-परन्तु उसे सभ्यता नहीं कहा जायगा। सभ्यता का सम्बन्ध हिंसा- अहिंसा से, सत्य-असत्य से, अस्तेय-स्तेय से, ब्रह्मचर्य-अब्रह्मचर्य से, अपरिग्रह- परिग्रह से नहीं। एक व्यक्ति पैसेवाला है, बड़े भारी मकान में रहता है, दो-चार मोटरें हैं, पांच-दस नौकर हैं, घर में रेडियो है, परन्तु परले दर्जे का झूठा, बेईमान, दुराचारी, शराबी है। वह सभ्य है, सुसंस्कृत नहीं; ऊंचे अर्थों में, उसके पास सभ्यता है, संस्कृति नहीं, और अगर उसके पास कोई संस्कृति है, तो वह ऊंची-संस्कृति, दैवी संस्कृति नहीं, नीची-संस्कृति, आसुरी-संस्कृति है, क्योंकि वह अहिंसा के स्थान में हिंसा को, सत्य के स्थान में असत्य को, अस्तेय के स्थान में स्तेय को, ब्रह्मचर्य के स्थान में अब्रह्मचर्य को, अपरिग्रह के स्थान में परिग्रह को जीवन का आधार बनाये हुए है। नीची, आसुरी संस्कृति को-ऐसी संस्कृति को जो झूठ, बेईमानी, ईर्षा, द्वेष, घृणा आदि पर खड़ी हो-कोई संस्कृति नहीं कहता, इसलिये हम भी इस प्रकार की संस्कृति के लिये 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग नहीं करेंगे। इस दृष्टि से कोई व्यक्ति 'सभ्य' होता हुआ 'असंस्कृत' हो सकता है, और 'सुसंस्कृत' होता हुआ 'असभ्य' हो सकता है क्योंकि सभ्यता भौतिक है, बाहर की चीज है, संस्कृति-अच्छी हो, बुरी हो-आध्यात्मिक है, भीतर की वस्तु है। विश्वमित्र ऋषि जंगल में एक पर्ण कुटी में रहते थे, वशिष्ठ ऋषि चर्म पहनते थे, महाराजा रामचन्द्र घोड़े के रथ पर सवारी करते थे, 'सभ्यता' की दृष्टि से आजकल के महलों में रहने वालों, मिलों का मुलायम कपड़ा पहनने वालों और हवाई जहाज की सवारी करने वालों से वे नीच थे, परन्तु 'संस्कृति' की दृष्टि से वे आजकल के लोगों से बहुत ऊंचे थे, क्योंकि आत्म तत्त्व को निखारने वाले, नीचे को ऊंचा बनानेवाले, मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले संस्कार उनके रोम-रोम में बसे हुए थे।

'सभ्यता' और 'संस्कृति' साथ-साथ भी चल सकती हैं, एक दूसरे के बिना रह सकती हैं। यह हो सकता है कि एक देश भौतिक-दृष्टि से अत्यन्त उन्नत हो, उसमें रेल, तार, रेडियो, मोटर-सब कुछ हो, और साथ ही उस देश के वासी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि के आध्यात्मिक तत्त्वों को भी जीवन का मुख्य सूत्र समझते हों। यह तो सबसे ऊंची अवस्था है, आदर्श स्थिति है। इस अवस्था में उस देश की सभ्यता तथा संस्कृति दोनों ऊंची कही जायेगी। यह भी हो सकता है कि एक देश भौतिक दृष्टियों से बहुत ऊंचा हो, वहां के विज्ञान के सब आविष्कार अपनी चरम सीमापर पहुंच चुके हों, परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से वह बहुत नीचा हो। वहां मोटरें हों, परन्तु मोटरों पर बैठने वाले लोग डाके डालते हों; रेडिया हों, परन्तु रेडियो पर अश्लील और गन्दे गाने गाये जाते हों। इस अवस्था में उस देश की सभ्यता ऊंची, परन्तु संस्कृति नीची कही जायगी। यह भी हो सकता है कि ऐसा देश भौतिक-दृष्टि से नीचे स्तर में हो, परन्तु आत्मिक-स्तर में बहुत ऊंचा उठा हुआ हो। उस देश के वासी एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते हों, दूसरे के कल्याण के लिये अपने स्वार्थ को तिलांजलि देते हों, झूठ, बेईमानी दुराचार से दूर रहते हों, परन्तु वे मोटरों के बजाय बैलगाड़ियों में चलते हों, महलों के बजाय झोपड़ों में रहते हों। इस अवस्था में वह देश सभ्यता में भले ही पिछड़ा हुआ गिना जाय, परन्तु संस्कृति में उसे देश के सामने सिर झुकाना होगा।

इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'सभ्यता' और 'संस्कृति' में ऊंचा स्थान संस्कृति का है-ऐसी संस्कृति का जिसके आधार में सचाई, ईमानदारी, संतोष, संयम, प्रेम आदि आध्यात्मिक तत्त्व कार कर रहे हों। रेल, तार, रेडियो की संसार को इतनी आवश्यकता नहीं, जितनी सचाई, ईमानदारी, संयम और विश्व-प्रेम की। दोनों का होना सबसे अच्छा, परन्तु दोनों न हों तो संस्कृति का होना सभ्यता से अच्छा। सभ्यता को संस्कृति की रक्षा के लिए छोड़ा जा सकता है, संस्कृति को सभ्यता की रक्षा के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। आत्मा के लिए शरीर छूट सकता है, शरीर के लिए आत्मा कैसे छूटेगा?

संस्कृति किसी सशक्त केन्द्रीय विचार से उत्पन्न होती है

हमने देखा कि 'सभ्यता' तथा 'संस्कृति' में क्या भेद है। हमने यह भी देखा कि 'संस्कृति' क्या है? परन्तु 'संस्कृति' उत्पन्न कैसे होती है? 'संस्कृति' का उद्भव जाति के जीवन के किसी ऐसे सशक्त विचार से होता है जो उस जाति के जीवन-रूपी वृत्त का मानो केन्द्र होता है, उस जाति के विकास की सम्पूर्ण धारा उसी विचार-रूपी स्रोत से मानो प्रवाहित होती है। जिस जाति के पास उसके जीवन को विकसित करने वाला ऐसा सशक्त केन्द्रीय विचार नहीं होता, उस जाति की संस्कृति शून्य के बराबर होती है, जिसके पास होता है उसकी संस्कृति उसी जाति को सैकड़ों में एक बना देती है। संस्कृति का प्रवाह जीवन के किसी केन्द्रीय विचार से प्रस्फुटित होता है। यह विचार ऐसा होता है जैसे शरीर में आत्मा। आत्मा से शरीर का जीवन है, उस केन्द्रीय विचार से संस्कृति का जीवन है। यह विचार जितना प्रबल होगा उतनी संस्कृति प्रबल होगी, प्राणवती होगी; यह विचार जितना निर्बल होगा उतनी संस्कृति निर्बल होगी, प्राणहीन होगी। संसार में एक नहीं अनेक संस्कृतियां आयीं और नष्ट हो गयीं। क्यों नष्ट हुईं? इसलिये क्योंकि उन संस्कृतियों का केन्द्रीय विचार निर्बल पड़ गया, संसार में विचारों के संघर्ष में वह टिक नहीं सका। जिस जाति के जीवन में कोई केन्द्रीय-विचार नहीं होता, ऐसा विचार नहीं होता जिसके लिये वह जाति जीती-मरती है, वह संसार में विजय प्राप्त करती हुई भी उस जाति के सम्मुख सिर झुका देती है जिसे इसने जीता होता है। जिस जाति के जीवन में कोई केन्द्रीय-विचार होता है, ऐसा विचार होता है जो उसे मरते-मरते भी जिन्दा रख सके, वह पराजित होती हुई भी विजेताओं के सामने सिर नहीं झुकाती। मिस्र, ग्रीस, रोम, बैबीलोन की संस्कृतियां नष्ट हो गयीं। क्यों नष्ट हुईं? इसलिये क्योंकि इन देशों की संस्कृतियों को जीवित रखने वाला कोई ऐसा सबल, सशक्त, प्राणवान् विचार नहीं रहा जो इनकी संस्कृतियों को जीवित रख सकता। ये देश तो अब भी मौजूद हैं, परन्तु अब जो-कुछ है, वह ईंट-पत्थर है, जिस केन्द्रीय विचार ने इन ईंट-पत्थरों को खड़ा किया था, जिस विचार ने मिस्र को मिस्र, यूनान को यूनान और रोम को रोम बनाया था, वह समाप्त हो गया- आत्मा चला गया, शरीर रह गया, परन्तु संस्कृति तो आत्मा है, शरीर नहीं, इसलिये शरीर के रह जाने पर भी आत्मा के न होने के कारण उन देशों का होना-न-होना बराबर है। भारत सदियों तक पराधीन रहा, इस पराधीनता को भारत के शरीर ने माना, इसके आत्मा ने नहीं माना। क्यों नहीं माना? इसलिये क्योंकि भारतीय संस्कृति के आधार में कोई ऐसा केन्द्रीय विचार था, जो दबाये दब नहीं सका, मिटाये मिट नहीं सका, हटाये हट नहीं सका।

आर्य संस्कृति का केन्द्रीय विचार

वह केन्द्रीय विचार क्या था? भारत की संस्कृति के प्राण वेद रहे हैं, उपनिषद् रहे हैं, गीता रही है। यहाँ की संस्कृति का मूल-मंत्र वही विचार था जिसका वेद के ऋषियों ने गान किया था, जिसका उपनिषदों के मुनियों ने उपदेश दिया था, जिसका गीता में श्रीकृष्ण ने प्रतिपादन किया था। यहाँ का मूल-भूत विचार एक था-प्रकृति है, परन्तु प्रकृति ही सबकुछ नहीं, प्रकृति के पीछे आत्म-तत्त्व है, वही तत्त्व जिसे कुछ लोग परमात्मा कहते हैं; शरीर है, परन्तु शरीर ही सबकुछ नहीं, शरीर के पीछे भी आत्म-तत्त्व है, वही तत्त्व जिसे कुछ लोग जीवात्मा कहते हैं। प्रकृति और शरीर का खेल संसार है; संसार है, तो संसार का भोगना भी टल नहीं सकता; परन्तु जैसा सत्य यह है कि संसार को हमने भोगना है, वैसा ही अटल सत्य यह भी है कि संसार को हमने छोड़ना भी है। परमात्म-तत्त्व के सामने प्रकृति-तत्त्व तुच्छ है, जीवात्म-तत्त्व के सामने शरीर-तत्त्व तुच्छ है। जीवात्म-तत्त्व ने शरीर को साधन बनाकर परमात्म-तत्त्व की तरफ आगे-आगे बढ़ते जाना है, जहाँ पहुँच चुका है उसे छोड़ कर जहाँ नहीं पहुँचा वहाँ कदम बढ़ाना है।

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

अक्षर लोक

(१) भटकाव ही पथ बन गये
(२) पंचवटी की खोज में
(३) देश परदेश सब बिराना है
(४) घर ही कारागार बन गया

(वेद प्रकाश 'बटुक' की आत्मकथा, क्रमशः प्रथम खण्ड, द्वितीय खण्ड, तृतीय खण्ड, चतुर्थ खण्ड)

प्रस्तुति : पेपर बैक

पृष्ठ संख्या क्रमशः ३८४, ३१८, २७२, २८६

मूल्य : क्रमशः ८००, ६००, ६००, ६०० रुपये

(चारों खण्डों का मूल्य : ढाई हजार रुपये

प्रकाशक : भारतीय साहित्य प्रकाशन

५७-ए, न्यू आर्य नगर, जेल रोड, मेरठ-२५०००४

बहुभाषाविद्, मानवशास्त्री और साहित्यकार वेद प्रकाश 'बटुक' किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद में १६३२ में हुआ। उनके पिता पण्डित कृष्ण लाल आर्य समाज के सहसंस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। उनकी माँ किरपा देई लोक संस्कृति की विश्वकोष जैसी थीं।

'बटुक' की पहली रचना सोलह वर्ष की उम्र में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने हिन्दी-अंग्रेजी में पैंतालीस से अधिक कवितायें रचीं जो उनके ढाई दर्जन संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। 'बाहुबली', 'उत्तर रामकथा', 'अभिशिप्त द्वापर' और 'ईसा मरता रहा' प्रबंध काव्य चर्चा में रहे हैं। लगभग डेढ़ सौ अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले के लेखागार में सुरक्षित हैं। वह कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले और शिकागो विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा-साहित्य-संस्कृति के प्राध्यापक रहे। 'बटुक' जी का जीवन वैविध्यपूर्ण और अनुभव सम्पदा से सम्पन्न रहा है। उन्होंने अपनी आत्मकथा को स्मृतियों, अनुभूतियों, समवेदनाओं, विचारो और भावनाओं से इस तरह सजाया है कि उसकी चमक किसी कोण से फीकी नहीं लगती। सहज, सरल, प्रवाहपूर्ण भाषा; किस्सागोई जैसी कथन शैली, अभिव्यक्ति की चित्रमयता और उत्सुकता जगाते रोचक विवरण पाठक को बांध रखने में पूरी तरह सक्षम हैं। कुछ उद्धरण दृष्टव्य हैं :

''शौच-प्रक्रिया भी स्त्रियों के लिये एक सामाजिक रिच्युअल थी। कई स्त्रियां घेरा बनाकर बैठतीं और घर बार की हर तरह की बातें करतीं। 'गॉसिप' का अड्डा बन जाता शौच-काल। वह उनका मनोरंजन का समय भी था। आखिरी घर से निकलने वाली स्त्री अगले घरों की स्त्रियों को 'बाहर चलने' का आमंत्रण देती। घर-घर से इकट्ठी कर घूरों पर जाने को। पुरुष हमेशा अकेले ही जाते। पर हम बालक भी कई-कई एक साथ घरों के इर्द-गिर्द बैठकर बतियाते रहते।'' (प्रथम खण्ड, पृष्ठ-१)

''पहलगाम की यात्रा के लिये लोग देशी, विदेशी खच्चर ले रहे थे। बच्चों ने कहा, नहीं, हम तो पैदल ही चलेंगे पहाड़ियों पर। चार साल के जयदेव ने भी और हम पैदल ही पहाड़ियों पर चढ़े। घूमघाम कर वापिस लौट रहे थे, तो एक वृद्ध कंकाल साथ-साथ चलने लगा डरा-डरा सा। फटे पुराने कपड़े। कुछ दूर चलकर, समीप आकर, हिचकिचाकर बोला, बाबू क्या मैं किसी बच्चे को कंधे पर बिठाकर ले चलूं। मैंने कहा, नहीं, सब खुश हैं पैदल चलने में। थोड़ी-थोड़ी चलकर बार-बार वह वही सवाल करता रहा और वही उत्तर पाता रहा। फिर गिड़गिड़ाकर बोला, बाबू कुछ दे देंगे, तो भूखे बच्चों के पेट में कुछ पड़ जायेगा। मैंने कहा, कुछ ले लो। उसने बिना कुछ किये लेने से मना कर दिया। मैं असमंजस में था। बच्चा कोई मानने को तैयार न था। बड़ी मुश्किल से सुनीता तैयार हो गयी।'' (द्वितीय खण्ड, पृष्ठ-१८२)

''अज्ञेय जी की ७५वीं जयन्ती मनायी गयी। इला की कोठी के लॉन में भारी जमावड़ा। कुमार गन्धर्व का संगीत। उन्होंने भैया को छोड़कर उसमें शामिल होने के लिये न धन्यवाद कहा, न पूछा, भैया कैसे हैं? क्या हिन्दी कवियों की संवेदनशीलता शब्दों तक ही सीमित है- मंच पर गुँजाये देशभक्त गीतों की तरह, जो उन्हें लखपती बनाती है और गरीब किसान-मजदूरों के बेटों को शहीद। खैर, अज्ञेय जी तो न अपना दर्द किसी से कहते थे, न औरों के विषय में पूछते थे। स्वभाव था स्थिति प्रज्ञता का!'' (तृतीय खण्ड, पृष्ठ-१७७)

''छियासी वर्ष की आयु में मैं अकेला जीने को विवश हूँ। अपने काम, कपड़े धोना, झाड़ पोंछा, अल्पाहार, काफी का प्रबन्ध कर लेता हूँ। लेखन तो पहले से अधिक। पर जो जीवन शेष है, वह क्या शेष है, कितने स्वप्न और भंग होने हैं, कितनी वेदनाएं राह देख रही हैं, अन्तिम क्षण तक!'' (चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ-२७४)

वेद प्रकाश 'बटुक' की आत्मकथा आपकी अपनी आत्मकथा भी लग सकती है। अवश्य पढ़ें।

काव्यायन

करो सभी मतदान

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

मतदाता ही लोकतंत्र का, निर्माता गतिमान।
आज उसी का ही करना है, हम सबको आह्वान।।
युग निर्वाचन का आया है, जागो वृद्ध जवान।
अपने मत का मूल्य समझकर, करो वोट का दान।।
समय गये पछताना होगा, अतः कर्म निज जान।
मनचाही सरकार बना लो, रखो कर्म का ध्यान।।
सर्वाधिक आवश्यक इस क्षण, करो सभी मतदान।
काम घरेलू जीवन के हों, या भोजन जलपान।।
सर्वप्रथम 'वोटिंग' करना है, कर्म स्वयं का जान।
योग्य तथा ईमानदार की, ही करना पहचान।।
इच्छानुकूल चुने जन प्रतिनिधि, यह कर्तव्य महान।
बुद्धि विवेक नहीं खो देना, उस क्षण बन्धु सुजान।।
कागज स्याही मुहर न अब कुछ, है कितना आसान।
ई.वी.एम. का बटन दबाया, हुआ त्वरित मतदान।।
होना नहीं कर्मच्युत किंचित, हो स्वदेश-हित ज्ञान।
जिन्हें योग्य जन नायक समझें, उन्हें चुनें श्रीमान्।।
रहे सुरक्षित जिनके हाथों, संविधान की शान।
व्यर्थ न बहकावे में आना, खोना स्वल्प न ज्ञान।।
नहीं देश रक्षा-विकास-पथ, पर आये व्यवधान।
पश्चाताप 'अबोध' रहे मत, किया नहीं मतदान।।

–'चन्द्रा मण्डप', 370/27, हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआदतगंज, लखनऊ–3

व्यर्थ टाँग न अड़ाइये

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

व्यक्ति का विरोध करो लेकिन हो तर्क पूर्ण,
भूल से भी देश को न हानि पहुँचाइये।
जानो इतिवृत्त और उसका चरित्र मित्र,
झूठ की मशीन लिए भ्रम न फैलाइये।
जिसके कृतित्व राष्ट्र जनहित में सदैव,
ऐसी शुभ निष्ठा पर प्रश्न न उठाइये।
आप यदि देश हित कर नहीं सकते तो,
करे जो, उसमें व्यर्थ टाँग न अड़ाइये।।

देशभक्ति और चरित्र जिसका प्रमाणयुक्त,
उसी पर मूढ़ कई लांछन लगाते हैं।
आ रही है हँसी देख आज बेईमान सारे,
सत्य ईमान पर ही अँगुली उठाते हैं।
अपने कुकृत्य नहीं जिनको दिखाई दिये,
वही अब सुकृत्यों को दर्पण दिखाते हैं।
जिनको दिखा न कभी स्वार्थ के अलावा कुछ,
बनकर हितैषी वे सभी को बहकाते हैं।।

–616/227, वसंत विहार, सिरमौरा गढ़ी, जनकीपुरम, लखनऊ–21

आत्म प्रसून

❑रामा आर्य 'रमा'

हरदोई जनपद 'रमा', गोनी गोंडवा ग्राम।
जहाँ प्रकृति की सम्पदा, पवन रम्य सुखधाम।।

भिन्न-भिन्न कौशल सहित, भिन्न-भिन्न कृषि कर्म।
मिलजुल सब रहते 'रमा', भिन्न जाति, मत धर्म।।

देवदत्त बसते जहाँ, वैद्यरत्न धी मान।
'रमा' त्रिपाठी वंश के, जिनकी मैं संतान।।

वैदिक धर्म विचार के, रहे सदा प्रतिमान।
दश लक्षण से युक्त जो, करते सभी बखान।।

मैं रामा हूँ सातवीं, उस कुल की संतान।
'रमा' नाम उपनाम से, जाने सभी सुजान।।

धर्म परायण ध्रुवव्रती, सकल गुणों की खान।
माँ मेरी जो थीं 'रमा', सुखरानी सुखधाम।।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

राम का भारतवर्ष

❑डॉ. कैलाश निगम

पाके वनवास और
राजसुख छिन गया,
कैकेयी के कोप
और दशरथ प्रण से।

वनवास में भी सिया
रह नहीं पाई साथ,
रावण ने छीन लिया
कनक – हिरण से।

अयोध्या में अवशेष
जन्मभूमि थी वो छिनी
बाबर के क्रूर आ-
क्रमण से दमन से।

किन्तु कहता हूँ किसी
के भी बस में नहीं–
जो राम को निकाले
हिन्दुस्तानियों के मन से।।

■ ■ ■

राम हैं नाम नहीं
किसी व्यक्ति का
भावना का इसे
स्पर्श कहेंगे।

राम है शोक की
औषधि एक,
इसे अनुगुंजित
हर्ष कहेंगे।

राम पवित्र-चरित्र
का द्योतक
सभ्यता का
उत्कर्ष कहेंगे।

आप इन्हें
अवधेश कहें
हम राम का
भारत वर्ष कहेंगे।।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

कान खोल सुन पाक!

❑अशोक शुक्ल
'अनजान'

आत्मघाती हमले से वार करते हो तुम,
लगता है सिंह की दहाड़ से हो डरते।

फाड़ तेरे जबड़े, तुम्हारे तोड़ देंगे दाँत,
हम भारतीय युद्ध खुल के हैं करते।

कान खोल सुन ले रे! दम्भी दुष्ट पाक,
भारत सपूत पग पीछे नहीं धरते।

भारतीय तुम्हें सदा मानते रहे अनुज,
अन्यथा कभी का मान मच्छर मसलते।

–प्रीति नगर द्वितीय, डुजैली मार्ग, लखनऊ

कालजयी काव्य

राम का उद्घोष
मैं आर्यों का आदर्श बताने आया

❑मैथिलीशरण गुप्त

"हाँ इसी भाव से भरा यहाँ आया मैं,
कुछ देने ही के लिए प्रिये, लाया मैं।
निज रक्षा का अधिकार रहे जन जन को,
सबकी सुविधा का भार किन्तु शासन को।
मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।
सुख-शान्ति-हेतु मैं क्रान्ति मचाने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया।
मैं आया उनके हेतु कि जो तापित हैं,
जो विवश, विकल, बल-हीन, दीन शापित हैं।
मैं आया, जिसमें बनी रहे मर्यादा,
बच जाय प्रलय से, मिटै न जीवन सादा।
सुख देने आया, दुःख झेलने आया,
मैं मनुष्यत्व का नाट्य खेलने आया।
मैं यहाँ एक अवलम्ब छोड़ने आया,
गढ़ने आया हूँ, नहीं, तोड़ने आया।
मैं यहाँ जोड़ने नहीं, बाँटने आया,
जगदुपवन के झंखाड़ छाँटने आया।
मैं राज्य भोगने नहीं, भुगाने आया,
हंसों को मुक्ता-मुक्ति चुगाने आया।
भव ने नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।
अथवा आकर्षण पुण्यभूमि का ऐसा,
अवतरित हुआ मैं, आप उच्च फल जैसा।
जो नाम मात्र ही स्मरण मदीय करेंगे,
वे भी भवसागर बिना प्रयास तरेंगे।
पर जो मेरा गुण, कर्म, स्वभाव धरेंगे,
वे औरों को भी तार, पार उतरेंगे।
बहु जन वन में हैं बने ऋक्ष-वानर-से,
मैं दूँगा अब आर्यत्व उन्हें निज कर से।
चल दण्डक वन में शीघ्र निवास करूँगा,
निज तपोधनों के विघ्न विशेष हरूँगा।
उच्चारित होती चले वेद की वाणी,
गूँजे गिरि-कानन-सिन्धु-पार कल्याणी।
अम्बर में पावन होम-धूप घहरावे,
वसुधा का हरा दुकूल भरा लहरावे।
तत्त्वों का चिन्तन करें स्वस्थ हों ज्ञानी,
निर्विघ्न ध्यान में निरत रहें सब ध्यानी।
आहुतियाँ पड़ती रहें अग्नि में क्रम से,
उस तपस्त्याग की विजय-वृद्धि हो हमसे।"

('साकेत' महाकाव्य के अष्टम सर्ग से सम्पादित अंश, साभार)

आह्वान

❑डॉ. उमाशंकर शुक्ल
'शितिकण्ठ'

कामना यही है वही रावणारि राघवेन्द्र
मंगल हमारा करें सर्वमंगलों के धाम।
शीष जटामुकुट कलित पुष्प-गुच्छ-युत,
भाल पर तिलक त्रिलोक-लोचनाभिराम।
अक्ष अरुणाभ मंजु मोहक सुमुख छवि,
कर चाप-शर पीत-अम्बर धरे ललाम।
अन्तर हमारे धर्म-ज्योति का करें प्रकाश,
जगे नरता का भाग्य भारत हो पुण्य धाम।।

धर्मरथी राम! जानें कहाँ खो गये हो, आज
छाये पुण्य धरा पर, रावण-रथी अनेक।
सत्य-शील शुभ आचरण का विचार कहाँ,
कदाचार-कुविचार-कुपथ पथी अनेक।
बढ़ रही आसुरी कुवृत्तियों की घनी बेल,
लुप्त हो रही है आर्य-संस्कृति की नेक-टेक।
आओ एकबार फिर दो प्रबोध रघुवीर
अब तो तुम्हारा ही बचा है अवलंब एक।।

–78, त्रिवेणी नगर–1 डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ–20

राजस्थान-समाचार

डीएवी कोटा में बच्चों ने बांधे परिण्डे

कोटा, १५ अप्रैल। प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करते हुए डीएवी एवं

आर्य समाज कोटा के तत्वावधान में विद्यालय परिसर में छात्र-छात्राओं ने गायत्री मंत्रोच्चार के साथ पक्षियों के लिए मिट्टी के परिण्डे बांधे। इस अवसर पर विद्यालय मैनेजमेंट कमेटी के वाइस चेयरमैन श्री एम.एल.पटीदी ने कहा कि ईश्वर के बनाये इन मूक पक्षियों के लिए गर्मी में परिण्डे बांधकर इनमें नियमित पानी भरना मानवीय सत्कर्म है। आर्य समाज कोटा के पूर्व जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने सामूहिक गायत्री मंत्र का पाठ कराते हुए छात्र-छात्राओं को अपने घरों की छतों, बालकनियों में भी परिण्डे रखकर पानी भरने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने पेड़ों व छाया वाले स्थानों पर पक्षियों के लिए परिण्डे बांधना व उनमें दाना पानी नियमित भरने का संकल्प दिलाया। परिण्डे आर्य समाज द्वारा उपलब्ध कराये गये।

नन्हे-मुन्नों ने भी बांधे मूक प्राणियों के लिए परिण्डे

कोटा। भीषण गर्मी से त्रस्त प्यासे पक्षियों के लिए आर्य समाज कोटा द्वारा डीएवी

स्कूल के नर्सरी ब्लॉक के बच्चों ने परिण्डे बांधे। बच्चों ने मिट्टी के परिण्डों में नित्य पानी भरने एवं पक्षियों के लिए चुग्गा डालने का भी संकल्प लिया। डीएवी स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए कहा कि सभी बच्चे जिम्मेदारी से परिण्डों में पानी एवं बाजरा-ज्वार के दाने डालेंगे। साथ कुछ बच्चे छुट्टियों में भी इस कार्य को अपनी-अपनी ड्यूटी दिन में आकर पूरा करेंगे। इस अवसर पर आर्य समाज जिला कोटा के पूर्व प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, डीएवी लोकल कमेटी के सदस्य डा.वेद प्रकाश गुप्ता, नर्सरी ब्लॉक की इंचार्ज ऊषा परमार, मंजू सचदेवा, शशि पारीक, दीपिका आदि अध्यापिकाएं उपस्थित थीं। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

लखनऊ-समाचार

डॉ.वेद प्रकाश आर्य का 79वाँ जन्मदिवस

रामनवमी के दिन डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता का

७९वाँ जन्मदिवस १८१-डी, शिवविहार कालोनी में वैदिक यज्ञ के आयोजन के साथ मनाया गया। यज्ञ की विशेषता यह थी कि आचार्या (ब्रह्मा) का दायित्व श्रीमती निमिषा वाजपेयी (बी.ए.,बी.एड., एम.बी.ए.) ने, जो कि डॉ.वेद प्रकाश आर्य की पौत्री हैं, कुशलतापूर्वक निभाया। नई पीढ़ी के वेदांजलि एवं वेदांश की उपस्थिति और सक्रियता मंगलमय भविष्य की सूचना दे रही थी। यज्ञ में डॉ.आर्य के साथ ही पत्नी श्रीमती सरला आर्य, पुत्रवधू-शशि एवं रश्मि, पुत्र आलोक वीर तथा अमित त्रिपाठी ने वेदमंत्रों का पाठ करते हुए आहुतियाँ दीं। इस अवसर पर कई हितैषियों, स्नेहीजनों के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए, जिनमें कु.अनूषा त्रिपाठी (नोएडा), श्री पाल प्रवीण (योगाश्रम), श्री गुरुप्रसाद मिश्र गांधी (सीतापुर), श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' (आदिलनगर), श्रीमती रामा आर्य (नेवाजगंज) श्री आर.सी.यादव एवं श्रीमती डा.सत्या यादव (इंदिरा नगर) एवं कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा) प्रमुख हैं। यज्ञ की परिसमाप्ति पर डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने सभी हितैषियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की है। कृतज्ञता ज्ञापन में वे सभी आर्यजन सम्मिलित हैं, जिनके संदेश नहीं प्राप्त हो सके हैं।

अमृतमुनि ने गौरव बढ़ाया

दि.२३.०३.१६, रविवार। आर्य समाज इन्दिरा नगर के साप्ताहिक अधिवेशन को

सम्बोधित करते हुए 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने कहा-'अशिव की क्षति और शिव की रक्षा साहित्य का पुनीत अनुष्ठान है। शिव की रक्षा में जो लोग संलग्न हैं, उनको निरन्तर प्रोत्साहित करना और अशिव शक्तियों को क्षत करना ध्येय होना चाहिए। 'अपघ्नन्तोऽराव्णः, कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' में यही संदेश वेद भगवान् ने दिया है। मनुष्य को परिभाषित करते हुए महर्षि दयानन्द ने कहा है कि दूसरों की रक्षा में यदि प्राण विसर्जन कारना पड़े तो मनुष्य को नहीं हिचकना चाहिए। यही मनुष्यत्व है। हम अपनी प्रार्थनाओं में बार बार कहते हैं कि 'हृदय में धैर्य वीरता सबको दो करतार'। किन्तु समय पड़ने पर अक्सर हमारा धैर्य जवाब दे देता है, वीरता की भावना सोई रहती है।'

डॉ.आर्य ने कहा- लोक प्रचलित दुर्बलताओं से ऊपर उठकर दि.१४.०३.१६ को आर्य समाज इंदिरानगर के पूर्व प्रधान श्री अमृत मुनि (पूर्व नाम रमेश चन्द्र त्रिपाठी, से.नि.सहायक विकास आयुक्त, उ.प्र.) जो वर्तमान में आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार के अन्तर्गत कुटिया नं.१/२३ में साधक हैं, ने सहारनपुर होकर देहरादून जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन में रात्रि १ बजे लुटेरों के चेन पुलिंग करके बोगी में घुसकर महिलाओं को बेइज्जत करके उनके आभूषण आदि जबरन छीनने का प्रयास करने वाले आततायियों को साहसपूर्वक रोका और घायल होने पर भी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हुए। प्राणों को संकट में डालकर नारी-रक्षा का यह महत् कार्य सम्पन्न करने वाले अमृतमुनि के इस आचरण ने जहाँ आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार का गौरव बढ़ाया वहीं आर्य समाज इन्दिरानगर एवं आर्यत्व को भी गौरवान्वित किया।

शोक समाचार

नहीं रहे पं.दीनानाथ शुक्ल

दुःख का विषय है कि ४६४/१८६,

सराय हसन गंज, डालीगंज निवासी पं. दीनानाथ शुक्ल (८५) का दि.२३ मार्च २०१६ को निधन हो गया। आप पिछले कुछ दिनों से गुर्दा रोग से पीड़ित थे। आप अपने पीछे पत्नी सुशीला शुक्ला के अलावा चार पुत्रियों-नीलिमा, ज्योतिमा, दिव्या और नीति तथा एक पुत्र संदीप शुक्ल को छोड़ गये हैं। सभी पुत्रियां और पुत्र विवाहित तथा अपने अपने कार्यों में संलग्न हैं। श्रीमती सुशीला से.नि. शिक्षिका हैं। आप हरदोई जिले के गोनी ग्राम निवास स्वतंत्रता सेनानी पं.चन्द्र भूषण तिवारी की बड़ी पुत्री हैं।

मूलतः गोंडा निवासी पं. दीनानाथ शुक्ल सचिवालय के कार्यकुशल सक्षम अधिकारियों में थे। अपनी वाक्पटुता और कुशल व्यवहार के लिए जाने जाते थे। 'आर्य लोक वार्ता' के आप प्रशंसकों और शुभचिंतकों में थे। आर्य लोक वार्ता परिवार तथा समाज ने एक सद् भावनापूर्ण व्यक्तित्व को खो दिया है।

रंजना श्रीवास्तव दिवंगत

७०१, सनशाइन-बी, ओमैक्स

रेजीडेंसी, सुल्तानपुर रोड निवासी श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव की धर्मपत्नी रंजना श्रीवास्तव (६१) का ०१.०४.१६ को आकस्मिक निधन हो गया। आप पिछले कुछ दिनों से गंभीर रूप से रोग ग्रस्त थीं। आप अपने पीछे शोकसंतप्त पुत्रियों- पल्लवी एवं पारुल के परिवार को छोड़ गई हैं। दोनों पुत्रियाँ अच्छे पदों पर कार्य कर रही हैं। दुःख के इस मौके पर उनके पतिदेव श्री गौरव श्रीवास्तव एवं श्री शंकर सिनहा मौजूद थे। पल्लवी एवं पारुल के पुत्रों के नाम क्रमशः कबीर और अर्जुन हैं।

शोक संतप्त परिवार के सभी सदस्यों ने वैदिक विधान के अनुसार डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) के आचार्यत्व में सम्पन्न यज्ञ में उपस्थित होकर वेदपाठ के साथ आहुतियाँ दीं। रेजीडेंसी में मौजूद शताधिक नर-नारियों से धैर्य और सान्त्वनामूलक मार्गदर्शन आचार्य द्वारा प्राप्त किया। दो मिनट मौन रहकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यज्ञ की सुचारु व्यवस्था एवं संयोजन का कार्य श्री दीपक कुमार दर्शन एवं श्रीमती सुनीता दर्शन ने किया।

श्रीमती मंजू सिंह दिवंगत

श्री नागेन्द्र नाथ सिंह, ए-११०३/४,

इन्दिरा नगर की धर्मपत्नी श्रीमती मंजू सिंह का १५ अप्रैल २०१६ को अल्प कालिक बीमारी के बाद दुःखद निधन हो गया। आप अपने पीछे पति श्री नागेन्द्र जी के अलावा दो पुत्रियों- श्रीमती तनू सिंह एवं कु.दिशा सिंह को छोड़ गई हैं। तनू सिंह के पति श्री शरद यादव मेरठ क्षेत्र में कार्यरत हैं।

स्व.मंजू सिंह की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन श्री नागेन्द्र नाथ सिंह के आवास पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। समस्त पारिवारिक जनों ने यज्ञ में आहुतियाँ दीं और दो मिनट मौन रहकर दिवंगत आत्मा की सद्गति और शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की। आचार्य जी ने जीवात्मा-परमात्मा के संबन्धों को लेकर उद्बोधक विचार प्रस्तुत किये, जिसे उपस्थित जनों ने शान्तिपूर्वक श्रवण किया।

मेरठ-समाचार

डॉ.संजीव शर्मा कुलपति नियुक्त

चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में राजनीति विभाग के आचार्य एवं

अध्यक्ष डॉ.संजीव शर्मा को महामहिम राष्ट्रपति ने महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्व विद्यालय मोतिहारी (बिहार) का कुलपति नियुक्त किया है। इस समाचार से शिक्षा प्रेमियों में हर्ष की लहर दौड़ गई है। डॉ.वागीश दिनकर, जगदीश प्रसाद शर्मा, डॉ.मधुसूदन त्रिपाठी, आर्य नेता सी.एम.चौहान, पद्मश्री रमाकान्त शुक्ल एवं डॉ.गणेशदत्त शर्मा ने इस नियुक्ति का हार्दिक स्वागत किया है तथा डॉ.शर्मा को बधाई दी है। डॉ.शर्मा अपने विषय के ख्यातिप्राप्त विद्वान हैं तथा अखिल भारतीय राजनीति शास्त्र ऐसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी हैं।

बताते चलें डॉ.संजीव शर्मा, प्रख्यात लेखक, शिक्षाविद् डॉ.चन्द्रपाल शर्मा के सुपुत्र हैं। आपके भाई डॉ.विकास शर्मा चौधरी चरणसिंह विश्व विद्यालय में अंग्रेजी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर एवं मूटा के पूर्व अध्यक्ष है। प्रोफेसर संजीव शर्मा की पत्नी निधि शर्मा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग में प्रोफेसर हैं। लोकप्रिय कवि एवं जाने माने राजनेता कुमार विश्वास डॉ.शर्मा के अनुज हैं।

डॉ.संजीव शर्मा की कुलपति पद पर नियुक्ति ने साहित्यकार पिता डॉ.चन्द्रपाल शर्मा को गौरवान्वित किया है। देश के कोने कोने से डॉ.शर्मा को पुत्र की इस सफलता पर बधाइयाँ मिल रही हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की डॉ.शर्मा को हार्दिक बधाई एवं शत शत शुभकामनाएँ!

डॉ.चन्द्रपाल शर्मा को 'संत तुलसीदास राष्ट्रीय सम्मान'

पिलखुआ। साहित्य कला एवं शिक्षण चेरिटेबल ट्रस्ट, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)

एवं अनंग प्रकाशन, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी के प्रख्यात लेख डॉ.चन्द्र पाल शर्मा को 'संत तुलसीदास राष्ट्रीय सम्मान' प्रदान किया गया। दिल्ली विश्व विद्यालय के उत्तरी कैम्पस में गुरु तेगबहादुर खालसा कालेज में 'संत साहित्य में समाज' विषय पर आयोजित सेमिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के मूर्धन्य प्रोफेसरों के मध्य डॉ.शर्मा को यह सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान रामचरित मानस पर आधारित उनकी पुस्तक 'मानस चिन्तन' के आधार पर दिया गया है। उपस्थित विद्वानों एवं श्रोताओं ने डॉ.शर्मा के भाषण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर उपस्थित विद्वानों में जामिया मिलिया के प्रो.कौशिक एवं प्रो.बिस्मिल्लाह, शिमला वि.वि. के प्रो. इन्द्रसिंह ठाकुर, दिल्ली वि.वि. के प्रो. रमेशचन्द्र मिश्र, डा.चरणजीत सचदेव, डा. प्रीतम सिंहगिल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

उतरौला-समाचार

आर्य समाज उतरौला जनपद बलरामपुर

आर्य समाज स्थापना दिवस

दिनांक ६ अप्रैल २०१६ को आर्य समाज उतरौला में आर्य समाज स्थापना दिवस जो कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को समाजों में मनाया जाता है सोल्लास प्रतिवर्ष की भांति मनाया गया जिसमें जनपद एटा से पधारे भजनीक श्री शिवपाल आर्य ने भजनों द्वारा श्रोताओं का मन मोहा एवं प्रधान श्री रामदेव ने नव संवत्सर पर प्रकाश डाला एवं काल गणना करते हुए नवसृष्टि संवत् से अवगत कराया। सायंकाल में कार्यक्रम के पश्चात् सहभोज का भी आयोजन किया गया।

शुद्धि एवं पाणिग्रहण संस्कार

आर्य समाज उतरौला जनपद बलरामपुर के प्रधान श्री रामदेव ने दि. २०.०१.१६ को आर्य समाज उतरौला में समा खान पुत्री मजीद, ग्राम रुखी बजारी को शुद्ध कर सीमा देवी नाम से पुर्नप्रतिष्ठित किया तथा दि.१०.०२.१६ को उनका पाणिग्रहण संस्कार श्री विवेक कुमार पुत्र श्री राधेश्याम के साथ सम्पन्न कराया। *(प्रेमचंद शर्मा)*

पहल

क्योंकि 'आर्य लोक वार्ता' हिन्दी का एकमात्र विज्ञापन रहित मासिक पत्र है, जो विगत बीस वर्षो से अनवरत अपनी गुणवत्ता और उदात्त वैदिक विचारधारा की सत्ता को बरकरार रखते हुए प्रकाशित हो रहा है, अतः इसके अस्तित्व एवं सातत्य का सारा दारोमदार स्वाध्याय को जीवनमंत्र मानने वाले होता सदस्यों पर निर्भर रहता हैं 'होता' अर्थात् समाज के वे चुनिन्दा लोग जो 'आर्य लोक वार्ता' को स्वाध्याय यज्ञ मानकर अपने सहयोग की आहुतियाँ अर्पित करते रहते हैं।

वर्ष के प्रारंभ में सबसे पहले इस ज्ञानयज्ञ में आहुति डालने वालों का महत्व बढ़ जाता है। सन् 2019 के प्रथम सत्र (जनवरी-मार्च) के प्रारंभ में प्रथम सहयोग आहुति इस ज्ञान यज्ञ में डाली है, वह हैं- श्री पाल प्रवीण, अलीगंज वैदिक सत्संग के संचालक। द्वितीय स्थान का गौरव प्राप्त हुआ है- पं.बालगोविन्द पालीवाल को जिन्होंने आर्य समाज गोमती नगर स्वाध्याय केन्द्र के सदस्यों की सहयोग राशि प्रदान की तथा तृतीय स्थान पर हैं सीतापुर जनपद के सुदूरवर्ती अंचल- पारा रमनगरा आर्य समाज के प्रधान श्री पं.राजकुमार शास्त्री, जिन्होंने स्वयं आकर वहां के सदस्यों की संकलित सहयोग राशि प्रदान की। साथ ही सार्वकालिक होता सदस्यों सहयोगकर्ता के रूप में माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार की माता रुक्मिणी आर्या एवं आर्य समाज टाण्डा के प्रधान कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य के प्रति आभार प्रकट करने के लिए 'पहल' के पास शब्द नही हैं। सभी कर्तव्य पथ पर अग्रसर रहें, यही हमारी कामना है।

ध्यान रखें, आर्य लोक वार्ता अपने सामान्य से सामान्य सदस्य-सहयोग कर्ता को आदर की दृष्टि से देखता है। हमारे लिए सभी प्रणम्य हैं। किसी पद पर प्रतिष्ठित हों अथवा न हों, सहयोगकर्ताओं से संबन्धित सूचनाएं समय समय पर पत्र में दी जाती रहेंगी। *-आलोक वीर आर्य, सम्पादक*

दिल्ली-समाचार

पद्माभिषेक महोत्सव के रूप में महाशय धर्मपाल जी का 96वां जन्मदिवस

२६ मार्च २०१६ का प्रभात अतिविशेष सुखद एवं आनन्द से भरपूर था।

प्रातःकाल ८.३० बजे से ही महाशय जी को उनके ९६वें जन्मोत्सव पर बधाई देने के लिए हर आयु वर्ग के लोग तालकटोरा स्टेडियम में आना प्रारंभ हो गए थे जिनमें आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासीवृंद, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, एमडीएच परिवार के साथ-साथ वरिष्ठ एवं विशिष्ट नागरिक आर्य नेता, राजनेता, धार्मिक संगठनों के संचालक, विद्वतजन, आर्य समाज के अधिकारी, सदस्य, कार्यकर्ता, धर्माचार्य, पुरोहितगण, गुरुकुल एवं कन्या गुरुकुल के छात्र-छात्राएं तथा आचार्यगण एवं तपस्वी विदुषी आचार्याएं एवं स्कूलों के होनहार बच्चे, अध यापक-अध्यापिकाएं हजारों की संख्या में उपस्थित थे। पूरा स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था और सैकड़ों लोग बाहर भी भ्रमण करते देखे गए। भारत की २२ आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी, कार्यकर्ता, महानुभाव महाशय जी को उनके जन्मोत्सव की बधाई देने हेतु दिल्ली पधारे। विशेष रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका से विश्रुत आर्य, ऑस्ट्रेलिया से योगेश आर्य, के अलावा हॉलैंड, मॉरिशस और अन्य कई देशों से आए प्रतिनिध सभाओं के अधिकारियों ने महाशय जी को जन्मदिन की बधाई देते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना की।

महाशय जी ने आगंतुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए अपनी वाणी से अमृत वचनों का उच्चारण करते हुए कहा कि 'जब आप इतने लोग मुझे जन्मदिन की शुभकामनाएं इतने प्रेम से दोगे तो मेरी आयु लगातार बढ़ती जायगी। मेरे जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य मानव सेवा है जिसे मैं निरंतर करता जाऊंगा। आप सभी का दिल से धन्यावाद।' कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने किया।

लखनऊ-समाचार

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद का वार्षिकोत्सव

भारतीय भाषाओं के प्रति देश-विदेश में सम्मान के लिए काम करने वाली संस्था

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद का वार्षिकोत्सव मंगलवार दिनांक २७ मार्च २०१६ को मनाया गया। हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए काम करने वाली चेन्नई की डॉ.श्रावणी भट्टाचार्य, बिजनौर के हितेश शर्मा, प्राची संस्थान के संस्थापक डॉ.सुरेश प्रकाश शुक्ला को सम्मानित किया गया। बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ.बृजेश कुमार ने कहा कि हमारा युवा वर्ग पश्चिमी भाषाओं के पीछे तेजी से भाग रहा है। हम भी कहीं न कहीं उसे बढ़ावा दे रहे हैं। हमें देश-विदेश के साथ अपने यहाँ भी भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान जगाना होगा। अतिथियों ने 'हिन्दी गरिमा २०१६' स्मारिका का विमोचन भी किया। परिषद के अध्यक्ष श्री महेश चंद्र द्विवेदी ने बताया कि संस्थान ने बच्चों में हिंदी प्रेम व सम्मान जगाने के लिए साल भर विद्यालयों में सुलेख, अंताक्षरी, वाद-विवाद, निबंध प्रतियोगिताएं हुईं। प्रतियोगिता में उच्च स्थान पाने वाले ५० छात्रों को पुरस्कृत किया गया। साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्याम कुमार, बीरबल साहनी संस्थान के निदेशक डॉ.मुकुन्द शर्मा, परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.मोहनलाल अग्रवाल, डॉ.ऊषा सिन्हा, राजेश शर्मा मौजूद थे। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

श्री लक्ष्मणमुनि आर्य का स्वागत

आर्यों की तपोभूमि ऋषि उद्यान अजमेर के योगसाधनारत श्री लक्ष्मण आर्य मुनि

(पूर्व प्रधान, आर्य समाज इन्दिरानगर, लखनऊ) के लखनऊ आगमन पर आर्य लोक वार्ता कार्यालय में स्वागत किया गया। उन्हें डॉ.वेद प्रकाश आर्य के प्रासंगिक काव्य 'धधकते पृष्ठ' की प्रति भेंट की गई। श्री लक्ष्मण आर्य मुनि ने 'आर्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक के वैदिक धर्म एवं वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार में योगदान की सराहना की। आपने कहा- अनेक पत्र-पत्रिकाओं के मध्य 'आर्य लोक वार्ता' तेजस्वी नक्षत्र की तरह प्रकाशमान है। जो मौलिक सामग्री इस पत्र में प्रस्तुत की जाती है और जिस प्रकार का सम्पादकीय एवं वेदमंत्र का काव्यानुवाद प्रकाशित हो रहा है, वह अन्यतम, अनुपम है। इसके प्रकाशन में योगदान एक पुण्य कार्य है, इससे विमुख होना अपने कर्तव्य पालन से विमुख होना है।

स्वाध्याय, संयम और सेहत

श्री लक्ष्मण आर्य मुनि ने तपोभूमि ऋषि उद्यान में रहते हुए अपने समय का

सदुपयोग किया तथा एक बहुत लोकोपकारी पुस्तक का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक है 'स्वाध्याय, संयम और सेहत'। यह पुस्तक सभी नर-नारियों के लिए संजीवनी महौषधि के समान है। इसे पढ़कर तथा तदनुरूप आचरण कर कोई भी अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। 'स्वाध्याय संयम और सेहत' में अनेक जीवनोपयोगी विषयों को जीवन के अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है तथा अनेक विशेषज्ञों के मतों को भी प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक प्राप्ति हेतु चलभाष नं.६३०७९६४१४३ पर सम्पर्क अपेक्षित है।

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज ने विश्व शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया

-आनन्द कुमार आर्य

आर्य समाज टाण्डा, जिला अम्बेडकरनगर द्वारा दिनांक ६ अप्रैल २०१६

तदनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में उपस्थित आर्य जनों ने अलग-अलग कुण्डों पर बैठकर यज्ञ किये। मंत्रोच्चारण आर्य समाज टाण्डा के पुरोहित श्री ओम प्रकाश शास्त्री के द्वारा किया गया। इस अवसर पर आर्य विद्वान् श्री विज्ञमित्र शास्त्री ने नव संवत्सर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सृष्टि संवत् की गणना विधि भी बतायी। आर्य समाज टाण्डा के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने नव वर्ष की शुभकामना देते हुए महर्षि द्वारा आर्य समाज की स्थापना करके इसके द्वारा राष्ट्र तथा समाज पर किये गये उपकारों की चर्चा की। आपने कहा- आर्य समाज ने वेदों की सत्ता स्थापित करके विश्व में शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। अर्चना शास्त्री ने नव वर्ष तथा वेदों का सन्देश पर सुन्दर गीत प्रस्तुत किये। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज टाण्डा के उपप्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा की प्रधानाचार्या डॉ.प्रशिषा श्रीवास्तव अपने विद्यालय परिवार के साथ मौजूद रहीं। इसके अतिरिक्त आर्य समाज टाण्डा के मंत्री योगेश आर्य, कोषाध्यक्ष रामसूरत मौर्य एवं सम्मानित सदस्यगणों में श्री बनारसी लाल, बृजमोहन आर्य, तेज प्रकाश जायसवाल, रामचन्द्र मौर्य एवं महिला आर्य समाज की तरफ से श्रीमती राजकुमारी देवी अपन सभी सदस्यों के साथ उपस्थित रहीं।

लखनऊ-समाचार

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ

(प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री)

वाषिक निर्वाचन की सूचना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ की अंतरंग बैठक दि. ४ अप्रैल २०१६ सम्पन्न हुई जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन रविवार दि. ६ जून २०१६ को सायं चार बजे नगर आर्य समाज रकाबगंज में सम्पन्न होगा। निर्वाचन के लिए वही आर्य समाज पात्र मानी जायेगी जिनको 'आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.' से मान्यता प्राप्त होगी एवं वहाँ पर उनका वार्षिक शुल्क अद्यतन जमा होगा। अतः लखनऊ जनपद की सभी आर्य समाज उपरोक्त प्रक्रिया तत्काल पूर्ण कर लें। सभी आर्य समाज को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जमा किए जाने वाले चित्र का प्रारूप यथाशीघ्र उपलब्ध करा दिया जायगा। चित्र शुल्क सहित ३१ मई तक मंत्री जी के पास जमा कर दिया जाए। चित्र के साथ 'आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.' में जमा किए गए अद्यतन शुल्क की छायाप्रति भी संलग्न की जाए।

राष्ट्रकल्याण देवयज्ञ

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा 'प्रदूषित वायुमण्डल शुद्धि, रोग नियंत्रण,

राष्ट्र कल्याण देवयज्ञ' का आयोजन ०५ अप्रैल से १३ अप्रैल तक लखनऊ के विभिन्न स्थलों पर किया गया। आचार्य सन्तोष वेदालंकार, आचार्या डॉ.निष्ठा विद्यालंकार एवं डा.प्रतिज्ञा आर्य द्वारा देवयज्ञ सम्पन्न कराया गया। इन अवसरों पर श्री नवनीत निगम, प्रधान द्वारा अपने उद्बोधन में पर्यावरण को प्रदूषण रहित करने के लिए एकमात्र उपाय वेदों में दिए गए निर्देशों के अनुसार शुद्ध एवं ऋतु अनुकूल जड़ी बूटियों से युक्त सामग्री से इस प्रकार के यज्ञ का आयोजन किया जाना बताया गया। स्थानीय जनता द्वारा इन कार्यक्रमों की सराहना की गई।

आर्य समाज शृंगारनगर में 101 कुण्डीय यज्ञ

वैदिक नव संवत्सर २०७६ के अवसर पर ०६ अप्रैल २०१६ को आर्य समाज

शृंगार नगर द्वारा १०१ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न कराया गया। इस कार्यक्रम में लखनऊ की सभी आर्य समाजों के सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान श्री नवनीत निगम एवं मंत्री श्री प्रबोध सागर जौहरी एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

होली मिलन समारोह-आर्य समाज लाजपत नगर में

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी दि. २४ मार्च को आर्य समाज चौक द्वारा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वावधान में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर लखनऊ जनपद की सभी आर्य समाजों के सदस्यों द्वारा एक दूसरे को होली की बधाइयां दी गईं। आचार्य रूपचंद्र दीपक एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री नवनीत निगम एवं अन्य विद्वानों द्वारा सभी को अमृतपान कराया गया। श्री प्रत्यूषरत्न पांडेय, प्रधान आर्य समाज चौक द्वारा इस अवसर पर जलपान की सुन्दर व्यवस्था की गई।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. प्रिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC-BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्किटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।